



اللَّهُ وَلِيُّ الَّذِينَ آمَنُوا لَا يُخْرِجُهُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ

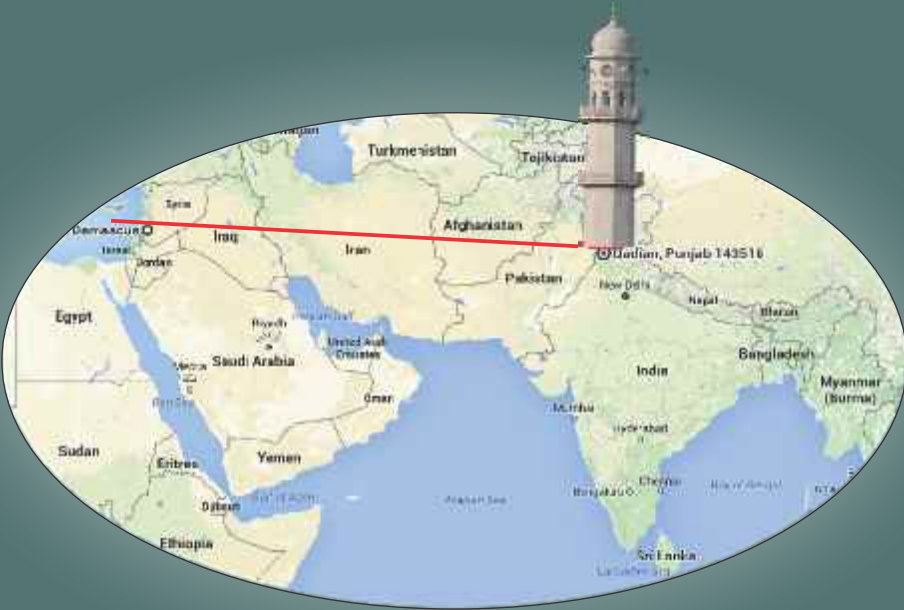
अल्लह उन लोगों का मित्र है जो ईमान लाते हैं। वह उन्हें अन्धेरी से निकाल कर प्रकाश की ओर लाता है। (अल् बक्कर: -258)

मासिक पत्रिका

राह-ए-ईमान

अमान (हिजरी शम्सी)

मार्च | 2016ई०



सिद्ध से मेरी तरफ आओ इसी में खैर है
हैं दरिन्दे हर तरफ़ में आफ़ियत का हूँ हिसार

(दुर्रें समीन)



मज्लिस ए आमला भारत के सदस्य वक्रार ए अमल करते हुए ।



खुदामुल अहमदिया चंडीगढ़ के सदस्य रक्तदान शिविर में भाग लेते हुए



हिंदी मासिक पत्रिका "राहे ईमान" की पैकिंग का द्रश्य।



मज्लिस खुदामुल अहमदिया चूरू राजस्थान द्वारा आयोजित तारबियती कैम्प का द्रश्य ।



मज्लिस खुदामुल अहमदिया खारा पंजाब द्वारा आयोजित "शांति का आह्वान" संगोष्ठी एवं उपस्थित सदस्यों का भव्य द्रश्य।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं।

Vol -18
Issue - 3

राह-ए-ईमान

मार्च
2016

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

विषय सूची

पृ.

1. पवित्र कुरआन..... 2
2. हदीस शरीफ..... 3
3. हजरत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी..... 4
4. मुहासिने कुरआन करीम नज्म..... 5
- 5 40 नफली रोजों कह तहरीक..... 6
- 6 सम्पादकीय.. 7
- 7 सारांश खुल्बा जुम्अ: 27 फरवरी 2015 ई. 8
8. हजरत मुहम्मद स.अ.व का पवित्र जीवन भाग(27)..... 12
- 9 हजरत मसीह मौऊद (अ) का मेहमानों से हुस्ने सुलूक 15
- 10 बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूँहेंगे..... 19
- 11 लाहे-अमल भाग -(6)..... 21
- 12 गुलदस्ता..... 27
- 11 सेहतके लिए अमरूद हैं फायदे मंद 31

पत्र व्यवहार के लिए पता :-

सम्पादक राह-ए-ईमान, मजलिस खुद्दामुल अहमदिय्या भारत,
क्रादियान - 143516 जिला गुरदासपुर, पंजाब।

Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)

Fax No. 01872 - 220139, Email : rahe.imaan@gmail.com

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम
जमाअत का सहमत होना जरूरी नहीं

वार्षिक मूल्य: 150 रुपए

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspur 143516 Punjab INDIA. Editor SK. Mujahid Ahmad



पवित्र कुरआन

وَقَالُوا كُونُوا هُودًا أَوْ نَصَارَىٰ يَهْتَدُوا ۚ قُلْ بَلْ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۚ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُسْرِكِينَ ۝

अनुवाद :- और वे कहते हैं कि यहूदी अथवा ईसाई बन जाओ तो हिदायत पा जाओगे । तू कह दे (नहीं) बल्कि (अल्लाह की ओर) झुके हुए इब्राहीम के धर्मानुयायी बन जाओ (यही हिदायत प्राप्ति का साधन है) और वह शिर्क करने वालों में से कदापि नहीं था । (सूर: अल-बकर: 136)

व्याख्या :- इस आयत में अल्लाह तआला फर्माता है कि :-

“यहूद कहते हैं कि यहूदी बनने में मुक्ति है और नसारा (ईसाई) कहते हैं कि इसाई बनने में मुक्ति है परन्तु दोनों की बात ग़लत है। सत्य यह है कि न यहूदी बनने से काम बनेगा न इसाई कहलवाने से बल्कि इब्राहीमी तरीके का अनुसरण कर के मुक्ति प्राप्ति होगी। यहाँ यह नहीं कहा कि इब्राहीमी कहलवाने से मुक्ति मिलेगी क्योंकि यह फिर वैसी ही बात हो जाती है जैसी इन्होंने कही थी इसलिए फर्माया कि हिदायत प्राप्त करने का तरीका यह है कि मनुष्य हिदायत का रास्ता अपनाए। यही तरीका इब्राहीम का था जो हर समय अल्लाहा के आदेशों की तरफ कान लगाए रखता था। केवल यहूदी अथवा इसाई कहलवाने से कुछ नहीं बन सकता।

सत्य तो यह है कि संसार में जितने धर्म पाए जाते हैं इन सब के अनुयायियों में अपनी अवनति के युग में यह विचार पैदा हो गया था कि शायद इसी धर्म में शामिल होकर मुक्ति प्राप्त हो सकती है लेकिन यह विचार ठीक नहीं है। मुक्ति का मूल कारण अल्लाह की कृपा होती है और अल्लाह की कृपा प्राप्त करने का रहस्य अल्लाह की पूर्ण आज्ञाकारी है। अतः जब तक किसी सच्चे धर्म में शामिल होकर अल्लाह की पूर्ण आज्ञाकारी हो, तब तक तो उस में मुक्ति प्राप्त करना सम्भव हो। लेकिन जब आज्ञा का पालन न हो तो कोई मुक्ति नहीं। इसलिए अल्लाह तआला ने यहाँ यहूद और इसाईयों को जो यह कहते हैं कि हिदायत चाहते हो तो हमारे धर्म को मान लो (अल्लाह तआला ने) इन दोनों से फिर डांट-डपट की है कि क्या किसी धर्म का नाम लेने से मुक्ति प्राप्त हो सकती है मुक्ति प्राप्त करने का सरल उपाय यह है कि इब्राहीम के तरीके का अनुसरण किया जाए और इब्राहीम का काम यह था कि इन्हें अल्लाह तआला की तरफ से जो आदेश भी मिला उन्होंने उसको स्वीकार कर लिया यही इब्राहीम अलै का धर्म है।

(तफसीर-ए-कबीर, भाग 2, पृ. 209)



हदीस शरीफ़

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लाम के कथन

अल्लाह और उसके रसूल से प्यार

हज़रत इब्ने अब्बास वर्णन करते हैं कि आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुआ मांगा करते थे कि हे अल्लाह! मैं तेरा अनुपालन करता हूँ, तुझ पर ईमान लाता हूँ, तुझ पर भरोसा करता हूँ, तेरी ओर झुकता हूँ, तेरी मदद से दुश्मन का मुकाबला करता हूँ। हे अल्लाह! मैं तेरी इज्जत की शरण चाहता हूँ। तेरे सिवा और कोई उपास्य नहीं। तू मुझे त्रुटि से बचा। तू जीवित है। तेरे सिवा कोई अस्तित्व नहीं, जिन्न तथा इंसान सब के लिए विनाश भाग्य है।

(मुस्लिम किताबुल ज़िक्र)

हज़रत अबू दर्दाअ वर्णन करते हैं कि आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फर्माया हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम इस प्रकार दुआ मांगा करते थे। “हे मेरे अल्लाह ! मैं तुझ से तेरी मुहब्बत मांगता हूँ और उन लोगों की मुहब्बत जो तुझ से मुहब्बत करते हैं और इस काम की मुहब्बत जो मुझे तेरी मुहब्बत तक पहुंचा दे। हे मेरे खुदा ! ऐसा कर कि तेरी मुहब्बत मुझे अपनी जान, अपने परिवार और ठंडे मीठे पानी से अधिक प्यारा और अच्छी लगे।

(तिर्मिज़ी किताब दावात)

हज़रत अनस वर्णन करते हैं कि आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फर्माया। तीन बातें हैं। जिस में हों वह ईमान की हलाकत और मिठास को महसूस करेगा। पहली यह कि अल्लाह तआला और उसका रसूल बाकी सभी चीजों से उसे अधिक प्रिय हो। दूसरी यह कि वह केवल अल्लाह तआला के लिए किसी से प्यार करे और तीसरी यह कि वह अल्लाह तआला की मदद से कुफ़्र से निकल आने के बाद फिर कुफ़्र में लौट जाने को इतना नापसंद करे जितना कि वह आग में डाले जाने को नापसंद करता हो

(बुखारी किताबुल ईमान)





रूहानी खज़ायन

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

क्रसम खाने का उद्देश्य

“क्रसम के बारे में भली भांति याद रखना चाहिए कि महावैभवशाली खुदा की क्रसमों का मनुष्यों की क्रसमों पर अनुमान लगाना ऐसा ही है जैसे एक वस्तु का दूसरी वस्तु पर अनुमान लगाना जबकि उनमें परस्पर कोई समानता या अनुकूलता नहीं। खुदा तआला ने मनुष्य को खुदा के अतिरिक्त किसी अन्य की क्रसमों खाने से मना किया है तो इसका कारण यह है कि मनुष्य जब क्रसम खाता है तो उसका उद्देश्य यह होता है कि जिस वस्तु की क्रसम खाई है उसे एक ऐसे चश्मदीद गवाह के स्थान पर खड़ा करे जो अपने व्यक्तिगत ज्ञान से उसके बयान का सत्यापन या उसे झुठला सकती है, क्योंकि यदि सोच कर देखो तो क्रसम का वास्तविक अर्थ गवाही ही है। जब मनुष्य साधारण गवाहों के प्रस्तुत करने से असमर्थ हो जाता है तो फिर क्रसम का मुहताज होता है ताकि उस से वह लाभ उठाए जो एक चश्मदीद गवाह की गवाही से उठाना चाहिए परन्तु यह प्रस्तावित करना या आस्था रखना कि खुदा के अतिरिक्त भी कोई मौजूद और दृष्टा है और सत्यापन झुठलाना, दण्ड देना या किसी अन्य बात पर उसे सामर्थ्य है स्पष्ट कुफ़्र का कलिमा है। इसलिए खुदा तआला की समस्त किताबों में मनुष्य के लिए यही शिक्षा है कि खुदा के अतिरिक्त की क्रसम कदापि न खाएं।

अब स्पष्ट है कि खुदा तआला की क्रसमों का मनुष्य की क्रसमों के साथ अनुमान लगाना उचित नहीं हो सकता क्योंकि खुदा तआला को मनुष्य की भांति कोई कठिनाई नहीं आती जो मनुष्य को क्रसम के समय पेश आती है अपितु उसका क्रसम खाना एक और रंग का है जो उसकी शान के यथायोग्य और उसके प्रकृति के नियम के अनुकूल है।”

(आईना कमालाते इस्लाम, पृष्ठ 95-96 हाशिया रूहानी खज़ायन, जिल्द-5)

दिलबरा मुझ को क्रसम तेरी यकताई की
आपको तेरी मुहब्बत में भुलाया हम ने

(आईना कमालाते इस्लाम, पृष्ठ-225, रूहानी खज़ायन, जिल्द-5)

“वल्लाहे इन्नी क्रद रअयतो जमालहू
बिउयूने जिस्मी क्राइदन बिमकानी”

अल्लाह तआला की क्रसम मैंने उसका सौन्दर्य देखा है। अपनी भौतिक आंखों से अपने मकान में।

(आईना कमालाते इस्लाम, पृष्ठ-593, रूहानी खज़ायन, जिल्द-5)



मुहासिने कुरआने करीम

कलाम हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब कादियानी मसीह मौऊद व

महदी मअहूद अलैहिस्सलाम

है शुक्रे रब्बे अज्ज-व-जल खारिज अज बयाँ
जिस की कलाम से हमें उस का मिला निशाँ
वो रौशनी जो पाते हैं हम इस किताब में
होगी नहीं कभी वो हज़ार आफताब में
उस से हमारा पाक दिल व सीना हो गया
वो अपने मुँह का आप ही आईना हो गया
उस ने दरख्ते दिल को मआरिफ़ का फल दिया
हर सीना शक से धो दिया, हर दिल बदल दिया
उस से खुदा का चेहरा नमूदार हो गया
शैतान का मकर व वस्वसा बेकार हो गया
वो रह जो ज़ाते अज्ज वो जल को दिखाती है
वो रह जो दिल को पाक व मुतह्हर बनाती है
वो रह जो यारे गुमशुदा को खींच लाती है
वो रह जो जामे पाक यकीन का पिलाती है
वो रह जो उस के होने पे मुहकम दलील है
वो रह जो उस के पाने की कामिल सबील है
उस ने हर एक को वही रस्ता दिखा दिया
जितने शकूक व शुब्हा थे सब को मिटा दिया
अफसुरदगी जो सीनों में थी दूर हो गई
जुल्मत जो थी दिलों में वो सब नूर हो गई

(दुर्रे समीन)



40 नफली रोज़ों की तहरीक

सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनसरेहिल अज़ीज़ ने ख़ुत्बा जुम्अः 7 अक्टूबर 2011 ई में जमाअत के लोगों को दुआओं के साथ नफली रोज़े रखने की हिदायत फरमाई थी। अब हुज़ूर ने अपने ख़ुत्बा जुम्अः 12 फरवरी 2016 ई में 40 नफली रोज़ों की तहरीक करते हुए फरमाया

“जैसे बच्चे के रोए बिना माँ की छातियों में दूध नहीं उतर सकता। उसी तरह अल्लाह तआला ने भी अपने रहम को बन्दे के रोने और चिल्लाने से जोड़ दिया है। जब बंदा चिल्लाता है तो रहमत का दूध उतरना शुरू हो जाता है। इसलिए जैसा कि मैंने बताया हमें चाहिए कि अपनी ओर से बहुत कोशिश मगर वह कोशिश नहीं जो मुनाफ़िक मुराद लेते हैं और उसके बाद जिस हद तक अधिक से अधिक दुआओं को ले जा सकते हैं हमें करनी चाहिए हमें ले जाना चाहिए। हज़रत मुस्लेह मौऊद ने उस वक़्त भी तहरीक की थी कि रोज़े रखें सात रोज़े रखें और दुआएं करें। कुछ साल हुए मैंने कहा था कि जमाअत को रोज़े रखने चाहिए और जमाअत में अब तक कुछ ऐसे हैं जो उस पर कायम हैं रखते हैं। कम से कम अब हमें चालीस रोज़े, साप्ताहिक ही रखें यानी चालीस सप्ताह तक रोज़े रखें खासकर दुआएं करें और नफिल अदा करें सदके दें क्योंकि जो हालात हैं जमाअत के उन में कई जगह बहुत अधिक कठोरता और तीव्रता आती जा रही है। जब हम अल्लाह तआला के हुज़ूर चिल्लाएंगे तो जिस तरह बच्चे के रोने से माँ की छातियों में दूध उतर आता है, आसमान से हमारे रब्ब की सहायता इंशा अल्लाह तआला नाज़िल होगी और वे रोकें और मुश्किलें जो हमारे रास्ते में हैं वे दूर हो जाएंगी। पहले भी दूर होती रहीं और अब भी इंशा अल्लाह तआला दूर होंगी।”

“पाकिस्तान में तो अहमदियों के ख़िलाफ़ कानून की मदद भी है और कानून विरोधियों की मदद करता है और वे जो चाहते हैं करते हैं। जो मुंह में आता है, जो बकवास गंदी बात कहनी होती है वे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बारे में कह रहे हैं। अहमदियों को जुल्म का निशाना बनाया जाता है। अदालतें जो हैं वे भी अब जरा जरा सी बात पर सज़ा देने पर तुली हुई है। तो इसके लिए तो हमें बहुत अधिक ख़ुदा तआला के सम्मुख चिल्लाने की ज़रूरत है। विशेष रूप से पाकिस्तान के अहमदियों को इस ओर पहले से अधिक ध्यान देने की ज़रूरत है। शुद्ध होकर अल्लाह तआला के आगे झुकें। नवाफल अदा करें। सदके दें। रोज़ें रखें। दुआ के बिना और अल्लाह तआला की रहमत को जोश में लाए बिना हमारे लिए और कोई रास्ता नहीं है। अल्लाह तआला खासकर उन अहमदियों को जहां यह अत्याचार हो रहे हैं जिन देशों में हो रहे हैं या जिन स्थानों पर हो रहे हैं ऐसी दुआओं की ताकत दे जो अल्लाह तआला के अर्श को हिलाने वाली हों और आम तौर पर दुनिया के अहमदियों को भी जमाअत की तरक्की और जुल्म से बचने के लिए दुआओं की तरफ ध्यान करना चाहिए अल्लाह तआला उन्हें भी तौफ़ीक़ प्रदान करे।”

अल्लाह तआला जमाअत को प्यारे हुज़ूर की तहरीक पर बढ़ कर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फरमाए।



हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का

पाकीज़ा बचपन और जवानी

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बचपन और जवानी के दिनों की पवित्र जीवनी पर आधारित रिवायतों में से तीन रिवायतें पेश हैं। उन से एक पाठक के लिए यह अनुमान लगाना मुश्किल नहीं होगा कि आप का बचपन और जवानी कैसी थी “हज़रत शेख याकूब अली साहब इरफानी ने आप के बचपन की एक अजीब घटना इस प्रकार बयान की है कि आप छोटी उम्र में ही अपनी एक हम उम्र से (जो बाद में आप के साथ ब्याही गई) फरमाया करते थे कि “दुआ कर कि खुदा मेरे नमाज़ नसीब करे।” (हयात तैयबा, लेखक शेख अब्दुल कादिर पूर्व सौदागर मल, पेज 10 मुद्रित 1959 ई)

हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एक सिख जमींदार का बयान दर्ज करते हुए लिखते हैं।

“ एक बार एक बड़े अधिकारी या रईस ने हमारे दादा साहब (यानी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पिता जी) से पूछा कि सुनता हूँ कि आप का एक छोटा लड़का भी है मगर हम ने उसे कभी देखा नहीं। दादा साहब ने मुस्कुराते हुए कहा कि हाँ मेरा एक छोटा लड़का तो है मगर वह कम ही नज़र आता है। अगर उसे देखना हो तो मस्जिद के किसी कोने में जाकर देख लें। वह तो मसीतड़ है और अक्सर मस्जिद में ही रहता है और दुनिया के कामों में उसे कोई दिलचस्पी नहीं। ” (सीरत-ए-तय्यबा हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद (र.अ) पृष्ठ 11 नज़ारत इशाअत रबवा 1960)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब तहरीर फ़रमाते हैं।

“ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जवानी का समय था जबकि मनुष्य के दिल में संसारिक विकास और सामग्री आराम की इच्छा अपने पूरे कमाल पर होती है और हुज़ूर के बड़े भाई साहिब एक प्रतिष्ठित पद पर नियुक्त हो चुके थे और यह बात भी छोटे भाई के दिल में एक ईर्ष्या या कम से कम नकल की प्रवृत्ति पैदा कर देती है। ऐसे समय में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पिता ने इलाके के एक सिख जमींदार द्वारा जो हमारे दादा साहब से मिलने आया था हज़रत मसीह मौऊद को कहला भेजा कि आजकल एक सत्ता के बड़े अधिकारी के साथ मेरे विशेष संबंध हैं यदि तुम्हें नौकरी की इच्छा हो तो मैं उस अधिकारी को कह कर तुम्हें अच्छी नौकरी दिला सकता हूँ। यह सिख जमींदार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और हमारे दादा साहब का संदेश पहुंचा कर तहरीक की, कि यह एक बहुत अच्छा मौका है इसे हाथ से जाने नहीं देना चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद ने इसके जवाब में फौरन कहा। हज़रत पिता से निवेदन कर दो कि मैं इन के प्यार और स्नेह का आभारी हूँ मगर

“मेरी नौकरी की चिंता न करें मैंने जहां नौकर होना था हो चुका हूँ।”

यह सिख जमींदार हज़रत दादा साहब की सेवा में हैरान व परेशान होकर वापस आया और कहा कि आपके बच्चे ने जवाब दिया है कि “ मैंने जहां नौकर होना था हो चुका हूँ ” दादा साहब कुछ देर चुप रहकर फरमाने लगे कि “अच्छा गुलाम अहमद ने कहा है कि नौकर हो गया हूँ तो ख़ैर है। अल्लाह तआला इसे बर्बाद नहीं करेगा।” और इसके बाद कभी कभी हसरत के साथ कहा करते थे कि सच्चा रास्ता तो यही है जो गुलाम अहमद ने अपनाया है हम तो दुनियादारी में उलझ कर अपनी उम्र बर्बाद कर रहे हैं। ” (सीरत-ए-तय्यबा पृष्ठ 7, 8. हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद)

एक बुजुर्ग हिंदू की रिवायत है कि आप के पिता जी आप के तकवा और अल्लाह तआला से संबंध को देखकर कहा करते थे कि “ जो हाल पवित्र गुलाम अहमद का है वह हमारा कहां। यह आदमी ज़मीन का नहीं, आसमान का है। यह आदमी नहीं फरिश्ता है। ” (तज़करतुल महदी भाग 2 पृष्ठ 302 पीर सिराजुल हक नोमानी प्रकाशन कादियान 1915 ई)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सीरत का यह एक पन्ना है जो आप की पवित्रता तकवा और अल्लाह तआला के प्यार का आइना दार है।

(शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)



**हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जीवनी के विभिन्न पक्षों पर
सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद^{रज़ि} द्वारा वर्णित विभिन्न ईमान वर्धक ऐतिहासिक
घटनाओं का वर्णन एवं जमाअत के लोगों को उपदेश**

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सीरत के विभिन्न घटनाओं का वर्णन करते हुए हुज़ूर फरमाते हुए

नादान नासिह (उपदेशक)

“हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पास एक व्यक्ति आया। उसने कहा कि मैं आपका बहुत प्रशंसक हूँ लेकिन एक बड़ी ग़लती आप से हुई है। (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को कहने लगा) आप जानते हैं कि उलेमा किसी की बात नहीं माना करते क्योंकि वे जानते हैं कि अगर मान ली तो हमारे लिए अपमान का कारण होगा। लोग कहेंगे यह बात अमुक को सूझी और उन्हें न सूझी इसलिए उनसे मनवाने का यह तरीक़ा है कि उनके मुंह से ही बात निकलवाई जाए। (अर्थात् उलेमा बात नहीं मानते। उलेमा से या मौलवियों से बात मनवाने का तरीक़ा यह है कि उन्हीं के मुंह से बात निकलवाई

जाए और जो तरीक़ा इस व्यक्ति ने पेश किया जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से मिलने आया था यह था कि) जब आप को मसीह के देहान्त का मस्ला मालूम हुआ था तो आप को चाहिए था कि प्रमुख प्रमुख उलेमा को आमंत्रित करते और एक बैठक करके यह बात उनके समक्ष पेश करते कि ईसाइयों को मसीह के जीवन पर विश्वास से बहुत मदद मिलती है और वह आपत्ति कर के इस्लाम को नुकसान पहुंचा रहे हैं। वे कहते हैं कि तुम्हारा नबी मर गया और हमारे धर्म के संस्थापक आसमान पर है। इसलिए वह उत्तम बल्कि खुद खुदा है। इसका क्या जवाब दिया जाए। (अर्थात् हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम उलमा को इकट्ठा करके यह पूछें कि यह बात है बताओ इसका क्या जवाब दिया जाए। तो वह व्यक्ति कहने लगा कि) इस समय उलेमा यही कहते कि आप कृपया बताइए उसका क्या जवाब है।

आप कहते कि राय तो वास्तव में आप लोगों की ही उत्तम हो सकती है लेकिन मेरा मानना है कि (हजरत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को यह परामर्श दे रहा है कि) आप यह कहते कि मेरा मानना है कि अमुक आयत से हजरत मसीह की मृत्यु साबित हो सकती है। उलमा तुरंत कह देते कि यह बात ठीक है। बिस्मिल्लाह करके घोषणा करें। हम समर्थन के लिए तैयार हैं। फिर उसी तरह यह मसला पेश हो जाता कि हदीसों में मसीह के फिर से आने का उल्लेख है मगर जब मसीह अलैहिस्सलाम मर गए तो इसका क्या मतलब समझा जाएगा। इस पर कोई आलिम आपके बारे में कह देता (कि) आप मसीह हैं और सभी उलमा ने इस पर पुष्टि की मुहर लगा देनी थी। यह प्रस्ताव सुनकर हजरत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़र्माया कि अगर मेरा दावा इंसानी चाल से होता तो बेशक ऐसा ही करता लेकिन यह ख़ुदा के आदेश से था। ख़ुदा तआला ने जिस तरह समझाया इसी तरह मैंने किया। तो (हजरत मुस्लेह मौऊद फ़र्माते हैं कि) चालें और धोखे इंसानी चालों के मुकाबले पर होते हैं। ख़ुदा तआला की जमाअत उनसे कभी नहीं डर सकती। यह हमारा काम नहीं ख़ुद ख़ुदा तआला का काम है।”

(ख़ुत्बाते महमूद भाग 12 पृष्ठ 196-197 ख़ुत्बा जुम्अ: 15 नवम्बर 1933 ई.)

और यह आजकल भी इसी तरह कुछ लोग कहते हैं कि इस प्रकार न किया जाए, इस प्रकार दावा किया जाए, नबी न माना जाए केवल मुजद्दिद कहा जाए तो समस्याएं हल हो सकती हैं। ख़ुद मेरे से भी यहां एक व्यक्ति मुसलमान पत्रिका के साक्षात्कार लेने आए थे। कहते हैं अगर आप हजरत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को नबी न मानें तो क्या फर्क पड़ता है ? फिर उलमा आप के खिलाफ नहीं रहेंगे। तो उसे मैंने बड़ा समझाया। हजरत मसीह मौऊद

अलैहिस्सलाम का यह जवाब दिया कि जो अल्लाह ने कहा है वह माना जाए या तुम्हारे उलेमा की बात मानी जाए लेकिन फिर भी उन्हें समझ नहीं आती।

आग हमारी गुलाम बल्कि गुलामों की गुलाम है।

हजरत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का एक इल्हाम है कि “आग से हमें मत डराओ आग हमारी गुलाम बल्कि गुलामों की गुलाम है।” (मल्फूजात भाग 4 पृष्ठ 211 प्रकाशन 1958 ई. यू.के)

हजरत मुस्लेह मौऊद फ़र्माते हैं कि मुझे याद है 1903 ई. में जब एक व्यक्ति अब्दुल ग़फ़ूर जो इस्लाम से मुर्तद होकर आर्य हो गया था और उसने अपना नाम धर्मपाल रख लिया था। “तर्क इस्लाम” नाम की किताब लिखी तो हजरत खलीफा अव्वल रज़ियल्लाहो अन्हो ने इसका जवाब लिखा जो “नूर दीन” के नाम से प्रकाशित हुआ। यह किताब दैनिक हजरत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को सुनाई जाती थी। जब धर्मपाल की यह आपत्ति आई कि अगर हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के लिए आग ठंडी हुई थी तो दूसरों के लिए क्यों नहीं होती और उस पर हजरत खलीफा अव्वल का यह जवाब सुनाया

Sayed Wasim Ahmad Mobile 09937238938



RUKSAR AGENCY

Pran Juice, Gandour Food Products,
Monginis Cake, Raja Biscuit etc.

Mubarakpur, At. Soro,
Distt. Balasore (Odisha)

गया कि इस जगह नार से उपस्थिति आग मतलब नहीं बल्कि विरोध की आग अभिप्राय है। तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़र्माया कि अर्थ की क्या ज़रूरत है। मुझे भी ख़ुदा तआला ने इब्राहीम कहा है अगर लोगों की समझ में यह बात नहीं आती कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के लिए आग कैसे ठंडी हुई तो वे मुझे आग में डालकर देख लें कि क्या मैं इस आग से सुरक्षा के साथ निकल आता हूँ या नहीं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस आदेश की वजह से हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल रज़ियल्लाहो अन्हो ने अपनी किताब “नूर दीन” में यही जवाब लिखा और लिखा कि “तुम हमारे इमाम को आग में डालकर देख लो। वास्तव में ख़ुदा तआला अपने वादा के अनुसार उसे आग से इसी तरह सुरक्षित रखेगा जिस तरह उसने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को सुरक्षित रखा था।”(नूरुद्दीन पृष्ठ 146)

(तफ़सीर कबीर भाग 7 पृष्ठ 614)

एक अवसर पर आप ने इसका अधिक विवरण भी वर्णन किया तथा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हवाले से चमत्कारों का भी उल्लेख किया। आपने फरमाया कि जिस किताब का उल्लेख हो चुका है जब हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल यह किताब “नूर उद्दीन” लिख रहे थे तो उसमें आपने लिखा कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को आग में जो डालने का उल्लेख है इसका मतलब लड़ाई की आग है। आपने माना कि आग में पड़ कर ज़िन्दा तो बचना मुश्किल है इसलिए आग का मतलब लड़ाई की आग लिया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इन दिनों बसरावां की ओर सैर के लिए जाया करते थे।(हज़रत मुस्लेह मौऊद कहते हैं कि) मुझे याद है कि मैं भी साथ था। किसी ने चलते हुए कहा कि हुज़ूर बड़े मौलवी साहब ने बड़ा सूक्ष्म बिंदु वर्णन किया है।(हज़रत मुस्लेह मौऊद फर्माते हैं कि जो लोग आमतौर पर तर्कसंगत

बातों की ओर अधिक आकर्षित हों वह ऐसी बातों को, इस तरह की तावीलें और नुक्ते बहुत पसंद करते हैं। लेकिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम लगभग सारी सैर में यह अस्वीकार करते रहे और कहा कि हमें इल्हाम हुआ है कि आग हमारी गुलाम बल्कि गुलामों की गुलाम है। तो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर अगर अल्लाह तआला ने ऐसा व्यवहार किया तो क्या दूरस्थ है(कि आग में डाला हो।) क्या प्लेग आग से कम है और देख लो क्या यह कम चमत्कार है कि चारों ओर प्लेग आई मगर हमारे घर अल्लाह तआला ने सुरक्षित रखे। इसलिए अगर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने आग से बचा लिया हो तो असंभव है। हमारी ओर से मौलवी साहब को कह दो कि यह लेख काट दें। इसलिए जैसा पहले उल्लेख हो चुका है वह काट दिया और फिर नई पंक्तियां लिखीं।”

चांद और सूरज ग्रहण

फिर एक चांद और सूरज ग्रहण की घटना के बारे में फर्माते हैं एक घटना हुई कि हमारी जमाअत की यह बड़ी प्रसिद्ध घटना है कि एक विरोधी मौलवी जो शायद गुजरात का रहने वाला था। हमेशा लोगों से कहता रहता था कि मिर्ज़ा साहब के दावे से बिल्कुल धोखा न खाना। हदीसों में साफ लिखा है कि महदी का चिन्ह यह है कि इस युग में सूर्य और चंद्रमा को रमज़ान के महीने में ग्रहण लगेगा। जब तक यह भविष्यवाणी पूरी न हो और सूर्य और चंद्रमा को रमज़ान के महीने में ग्रहण न लगे उनके दावे को कभी सच नहीं माना जा सकता। संयोग की बात है कि वह(मौलवी) अभी ज़िन्दा ही था कि सूर्य और चंद्रमा के ग्रहण की भविष्यवाणी पूरी हो गई।(ग्रहण लग गया तो) उस(मौलवी) के पड़ोस में एक अहमदी रहता था उसने सुनाया कि जब सूर्य ग्रहण लगा तो उसने घबराहट

में अपने घर की छत पर चढ़कर टहलना शुरू कर दिया। वह टहलता जाता था और कहता जाता था 'हुण लोग गुमराह होंगे। हुण लोग गुमराह होंगे' अर्थात् अब लोग भटक जाएंगे। उस ने यह नहीं समझा कि जब भविष्यवाणी पूरी हो गई है तो लोग हज़रत मिर्ज़ा साहब को मानकर हिदायत पाएंगे गुमराह नहीं होंगे। आप कहते हैं कि ईसाई भी एक तरफ तो यह मानते थे कि वे सभी लक्षण पूरे हो गए हैं जो पहली पुस्तकों में पाए जाते हैं, लेकिन दूसरी ओर रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का दावा सुनकर वह भी यह कहते थे कि इस समय ग़लती से एक झूठे ने दावा कर दिया। जैसे मुसलमान कहते हैं लक्षण तो पूरे हो गए मगर संयोग की बात यह है कि इस समय एक झूठे ने दावा कर दिया है लेकिन अजीब बात यह है कि ऐसे संयोग एक झूठे को ही नसीब होता है (और) सच्चों को नसीब नहीं होता।" (तफ़सीर कबीर भाग 10 पृष्ठ 56) झूठे के पक्ष में तो समर्थन प्रकट होते हैं और सच्चों के पक्ष में आजकल कुछ नहीं हो रहा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की क्षमा और माफी का उल्लेख करते हुए एक जगह आप फ़र्माते हैं। कि जिस जिस रंग में दुश्मनों ने आप का मुक़ाबला किया दोस्त जानते हैं। दुश्मनों ने कुम्हारों को आप का बर्तन बनाने से, सक्कों को पानी देने से बंद कर दिया लेकिन फिर जब कभी वह माफी के लिए आए तो हज़रत साहिब माफ़ ही फ़र्मा देते थे।

एक बार आप के कुछ विरोधी पकड़े गए तो मजिस्ट्रेट ने कहा कि मैं इस शर्त पर मुकदमा चलाऊंगा कि मिर्ज़ा साहब द्वारा सिफारिश न आए क्योंकि अगर उन्होंने बाद में माफ़ कर दिया तो फिर मुझे बेकार में उन्हें गिरफ्तार करने की क्या ज़रूरत है मगर दूसरे दोस्तों ने कहा कि नहीं अब उन्हें सज़ा ज़रूर ही मिलनी चाहिए। जब अपराधियों ने समझ लिया कि

अब सज़ा ज़रूर मिलेगी तो उन्होंने हज़रत साहब के पास आकर माफी चाही। हज़रत साहब ने काम करने वालों को बुलाकर फ़र्माया कि उन्हें माफ़ कर दो। उन्होंने कहा कि हम तो अब वादा कर चुके हैं कि हम किसी की सिफारिश नहीं करेंगे। हज़रत अकदस फ़र्माने लगे कि वह जो माफी के लिए कहते हैं तो हम क्या करें। मजिस्ट्रेट ने कहा देखा वही बात हुई जो मैं पहले कहता था। मिर्ज़ा साहब ने माफ़ कर ही दिया।"

(खुत्बाते महमूद भाग 10 पृष्ठ 277)

तो यह जो घटनाएं हैं, हमें इन से केवल प्रसन्न नहीं होना चाहिए बल्कि अपने ऊपर लागू भी करना चाहिए। माफी और क्षमा की ओर पर्याप्त ध्यान देने की आवश्यकता है।

एक मुबारक तहरीक

फिर आप फ़र्माते हैं कि "हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने विरोधियों को तहरीक की कि ऐसे जलसे आयोजित किए जाएं जिनमें हर व्यक्ति अपने धर्म के गुण वर्णन करे। आप ने यह नहीं कहा क्योंकि मैं खुदा तआला की ओर से आया हूँ इसलिए सब लोग अपने अपने धर्म की तबलीग़ बंद कर दें। आपने ऐसा नहीं किया क्योंकि आप जानते थे कि बाकी लोगों को भी तबलीग़ का वैसा ही अधिकार है जैसा मुझे। इसलिए आपने फ़र्माया कि तुम अपनी बात प्रस्तुत करो मैं अपनी बात प्रस्तुत करता हूँ और जब तक यह तरीका प्रस्तुत किया शांति कभी नहीं हो सकती और सच्चाई नहीं फैल सकती। दुनिया में कौन है जो अपने आप को हक़ पर नहीं समझता लेकिन जब विचारों में मतभेद हो तो ज़रूरी है कि उसे व्यक्त करने का अवसर दिया जाए।

(खुत्बाते महमूद भाग 12 पृष्ठ 418 खुत्बा जुम्अ:30

नवम्बर 1930 ई.)

☆ ☆ ☆



विश्व के महानतम अवतार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पवित्र जीवन

भाग -28

लेखक - हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब खलीफ़तुल मसीह सानी रज़ि.

पिछले भाग का सारांश :- आहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक रोया देखी कि आप मस्जिद हराम में तवाफ कर रहे हैं इस की ताबीर के नतीजा में आप ने 1500 सहाबा के साथ तवाफ काबा का इरादा फरमाया। बाद में सुलह हुदैबिया के स्थान पर सुलह हुई। इस सुलह के नतीजा में मुसलमानों और कुप्फार मक्का में शान्ति स्थापित हो गई। इस समय हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बादशाहों के नाम खत भेजे। कैसर रौम ने इस खत से क्या नतीजा निकाला वह नीचे वर्णन है.....

कैसर-ए-रौम का परिणाम निकालना कि मुहम्मद (स.अ.व.) सच्चे नबी हैं।

इस पर कैसर ने कहा सुनो ! मैंने तुम से यह प्रश्न किया था कि उसका खानदान (वंश) कैसा है, तो तुम ने कहा — वह वंश की दृष्टि से अच्छा है तथा नबी लोग ऐसे ही हुआ करते हैं। फिर मैंने तुम से पूछा कि क्या इस से पूर्व किसी व्यक्ति ने ऐसा दावा किया है तो तुमने कहा नहीं। यह प्रश्न मैंने इसलिए किया था कि निकट युग में इस से पूर्व ऐसा दावा किया होता तो मैं समझता कि यह भी उसकी नक़ल कर रहा है। फिर मैंने तुम से पूछा— कि क्या इस दावे से पूर्व उस पर झूठ का भी आरोप लगाया गया है। तुमने कहा— नहीं। तो मैंने समझ लिया कि जो व्यक्ति मनुष्यों के संबंध में झूठ नहीं बोलता वह खुदा के संबंध में भी झूठ नहीं बोल सकता। फिर मैंने तुम से पूछा— उसके पूर्वजों में से कोई बादशाह भी था, तो तुम ने कहा— नहीं। तो मैंने समझ लिया कि उसके दावे का कारण यह नहीं

कि इस बहाने से अपने पूर्वजों का देश वापस लेना चाहता है। फिर मैंने तुम से पूछा— क्या अभिमानी और शक्तिशाली लोग उसकी जमाअत में सम्मिलित होते हैं या निर्बल और असहाय लोग। तुम ने उत्तर दिया— निर्बल और असहाय लोग। अतः मैंने सोचा कि समस्त नबियों की जमाअत में अधिकतर असहाय और निर्धन लोग ही सम्मिलित हुआ करते हैं न कि अहंकारी और अभिमानी लोग। फिर मैंने तुम से पूछा कि क्या वे बढ़ते हैं या घटते हैं या तो तुमने कहा वे बढ़ते हैं और यही स्थिति नबियों की जमाअत की हुआ करती है। जब तक वह पूर्णता को नहीं पहुँच जाती तब तक वह बढ़ती चली जाती है। फिर मैंने तुम से पूछा कि क्या कोई व्यक्ति उसके धर्म को अच्छा न समझ कर धर्म से विमुख भी होता है तो तुम ने कहा— नहीं। नबियों की जमाअत की यही स्थिति होती है। किसी अन्य कारण से कोई व्यक्ति निकले तो निकले, धर्म को बुरा समझ कर नहीं निकलता। फिर मैंने तुम से पूछा

— क्या तुम्हारे मध्य कभी युद्ध भी हुआ है तथा उसका परिणाम क्या होता है? तो तुम ने कहा लड़ाई हमारे घाट के डोल की भांति है। नबियों की यही परिस्थिति होती है। प्रारम्भ में उनकी जमाअतों पर संकट आते हैं परन्तु अन्त में जीत उन्हीं की होती है। फिर मैंने तुम से पूछा — वह तुम्हें क्या शिक्षा देता है, तो तुम ने उत्तर दिया कि वह नमाज़ और सच्चाई, सतीत्व और समझौता पूर्ण करने और अमानतदार होने की शिक्षा देता है तथा इसी प्रकार मैंने तुम से पूछा कि वह धोखा भी देता है, तो तुम ने कहा नहीं और ये आचरण तो सदात्मा पुरुषों के ही हुआ करते हैं। अतः मैं समझता हूँ कि वह नबी होने के दावे में सच्चा है और मेरा स्वयं यह विचार था कि इस युग में वह नबी आने वाला है परन्तु यह विचार नहीं था कि वह अरबों में पैदा होने वाला है और तुम ने मुझे जो उत्तर दिए हैं यदि वे सच्चे हैं तो फिर मैं समझता हूँ कि वह इन देशों पर अवश्य अधिकार कर लेगा (बुखारी) उसकी इन बातों पर उसके दरबारी उत्तेजित हो उठे और उन्होंने कहा — आप मसीही होते हुए एक दूसरी जाति के व्यक्ति की सच्चाई को स्वीकार कर रहे हैं तथा दरबार में विरोध के स्वर गूँजने लगे। इस पर दरबार के अफ़सरों ने बड़ी शीघ्रता से अबू सुफ़यान और उसके साथियों को दरबार से बाहर निकाल दिया।

हिरक़ल के नाम हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) के पत्र का लेख

हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने जो पत्र क्रैसर-ए-रौम के नाम लिखा था उस की इबारत यह थी —

अर्थात् यह पत्र अल्लाह के बन्दे मुहम्मद की ओर से रौम के बादशाह हिरक़ल की ओर लिखा जाता है। जो व्यक्ति भी खुदा के बताए

हुए मार्ग का अनुसरण करे, ईश्वर उसे दीर्घायु करे। तत्पश्चात् हे बादशाह ! मैं तुझे इस्लाम की ओर आमंत्रित करता हूँ (अर्थात् एक खुदा और उसके रसूल मुहम्मद (स.अ.व.) पर ईमान लाने की ओर) हे बादशाह ! तू इस्लाम को स्वीकार कर ले, तो खुदा तुझे समस्त उपद्रवों से बचा लेगा तथा तुझे दोगुना प्रतिफल प्रदान करेगा (अर्थात् ईसा पर ईमान लाने का भी और मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) पर ईमान लाने का भी) परन्तु यदि तू ने इस बात को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया तो तुझ पर केवल तेरे अकेले का ही पाप नहीं होगा अपितु तेरी प्रजा के ईमान न लाने का पाप भी तुझ पर होगा। (अन्त में कुर्आन करीम की आयत लिखी हुई थी जिसका अर्थ यह है) अर्थात् हम खुदा तआला के अतिरिक्त किसी की उपासना न करें तथा किसी वस्तु को उसका भागीदार न बनाएं और अल्लाह तआला के अतिरिक्त हम किसी बन्दे को भी इतना सम्मान न दें कि वह खुदाई विशेषताओं का अधिष्ठाता जाने लगे। यदि अहले किताब (यहूदी-ईसाई) इस एकेश्वरवाद के निमंत्रण को स्वीकार न करें तो

Mobile
09937845993

Ziyafat Khan

Love For All Hatred For None



दुआओं का आवेदक

WASIMA STONE CRUSHER

Pankal, Near Nuapatna Town,
Distt. Cuttack (Odisha)

हे मुहम्मद अल्लाह के रसूल तथा उसके साथियो ! उन से कह दो कि हम तो खुदा तआला के आज्ञाकारी हैं। (अर्थात् आपको खुदा का सन्देश पहुँचा दिया है।)


कुछ इतिहास की पुस्तकों में लिखा है कि बादशाह के सामने जब यह पत्र प्रस्तुत हुआ तो दरबारियों में से कुछ ने कहा कि इस पत्र को फाड़ कर फेंक देना चाहिए; क्योंकि इसमें बादशाह का अपमान किया गया है और पत्र के ऊपर बादशाह-ए-रौम नहीं लिखा गया अपितु रौम का उत्तराधिकारी लिखा है परन्तु बादशाह ने कहा— यह बुद्धि संगत नहीं कि पत्र पढ़ने से पूर्व फाड़ दिया जाए तथा उस ने यह जो मुझे रौम का उत्तराधिकारी लिखा है यह उचित है। वास्तव में स्वामी तो खुदा ही है, मैं उत्तराधिकारी ही हूँ। जब मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) को इस घटना की सूचना मिली तो आपस. ने फ़रमाया— रौम के बादशाह ने जो व्यवहार किया है और जो ढंग अपनाया है उसके कारण उसका शासन सुरक्षित रहेगा और उस की सन्तान देर तक शासन करती रहेगी। अतः ऐसा ही हुआ। बाद

के युद्धों में यद्यपि देश का बहुत सा क्षेत्र रसूले करीम (स.अ.व.) की एक अन्य भविष्यवाणी के अनुसार रौम के बादशाह के हाथ से छीना गया, परन्तु इस घटना के छः सौ वर्ष तक उसके वंश का शासन कुस्तुनतुनिया में रहा। रौम के शासन में रसूलुल्लाह (स.अ.व.) का पत्र बहुत समय तक सुरक्षित रहा। अतः बादशाह मन्सूर क़लादून के कुछ दूत एक बार रौम के बादशाह के पास गए तो बादशाह ने उनको दिखाने के लिए एक छोटा सन्दूक मंगाया और कहा कि मेरे एक दादा के नाम तुम्हारे रसूल का एक पत्र आया था जो आज तक हमारे पास सुरक्षित है।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

<i>Mubarak Ahmad</i> 9036285316 9449214164	<i>Feroz Ahmad</i> 8050185504 8197649300
मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं	
MUBARAK	
TENT HOUSE & PUBLICITY	
  	
CHAKKARKATTA, YADGIR - 585202, KARNATAKA	

<i>Prop. Md. Mustafa</i>
Love For All Hatred For None दुआओं का आवेदक
BHARAT BATTERIES & AUTO ELECTRICALS

Mfrs. of : BHARAT BATTERY & BHARAT PLATES
Spl. in : All kinds of Battery Re-build & All Vehicles Automobiles, Electrical Job work undertaken
Opp. S. B. H., B. B. Road, Shahpur-585 223, Distt. Yadgir, Karnataka.
Ph : 08479-240269, Cell: 09845924940, 09986253320

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का मेहमानों से हुसने सलूक (सद व्यवहार)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने मेहमानों से अत्यधिक सद व्यवहार किया करते थे और मेहमानों का बहुत सम्मान किया करते थे। जो लोग भी विभिन्न अवसरों पर कादियान आया करते वे चाहे अहमदी हों या ग़ैर अहमदी आपकी मेहमान नवाज़ी(आतिथ्य) से भरपूर फायदा उठाया करते थे। आप उनके रहने, खाने पीने और प्रत्येक प्रकार के आराम का स्वयं ध्यान रखते थे। आप लोगो से हमेशा हंसमुख चेहरे के साथ मिलते, हाथ मिलाते, हाल चाल पूछते और उन्हें सम्मान के साथ बिठाते। गर्मियों का मौसम होता तो उन्हें शरबत बना कर पेश करते और सर्दियां होतीं तो उनके लिए चाय, दूध आदी तैयार करवाते, रहने के स्थान का खुद प्रबंध करते और प्रबंधको को स्वयं बुलाकर निर्देश देते और हमेशा यह ध्यान रखते कि मेहमान को किसी प्रकार की तकलीफ़ न हो

हज़ूर के एक सहाबी सेठ गुलाम नबी साहिब वर्णन करते हैं कि मैं हुज़ूर से भेंट करने के लिए चकवाल(पाकिस्तान)से कादियान आया। इन दिनों कड़ाके की सर्दी थी और वर्षा भी हो रही थी। रात को मैं खाना खाकर सो गया और आधी रात बीत चुकी थी कि किसी ने मेरा दरवाज़ा खटखटाया मैंने उठकर दरवाज़ा खोला तो देखा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक हाथ में गर्मागर्म दूध और दुसरे हाथ से लालटेन लिए खड़े हैं और मुझे बहुत प्रेम के साथ कहा कि कहीं से दूध आ गया था, परन्तु

देर से आया है मैंने सोचा आपको रात में दूध पीने की आदत होगी यह पी लें। आप (गुलाम नबी साहिब) सम्पूर्ण जीवन यह घटना बताते रहते थे और आपकी आंखे आंसुओं से भर आती थीं।

प्रसिद्ध सहाबी हज़रत मोलवी अबदुल करीम साहिब स्यालकोटी वर्णन करते हैं कि:- गर्मियों का मौसम था और हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के परिवार वाले लुधियाना गए हुए थे। मैं आपको मिलने के लिए अन्दर चला गया। आप अलैहिस्सलाम एक कमरे में टहलते हुए पढ़ रहे थे। मैं वहां चारपाई पर बैठते ही लेट गया और मुझे नींद आ गई। कुछ देर बाद जागा तो क्या देखता हूं कि मेरे आका व पीर सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम चारपाई के पास ही नीचे फ़र्श पर लेटे हुए हैं। मैं घबराकर अड़ब से खड़ा हो गया। आपने बहुत प्रेम से पुछा कि मौलवी साहिब आप क्यों उठ बैठे? मैंने कहा खुदा का मसीह नीचे फ़र्श पर लेटे और यह दास चारपाई पर कैसे सो सकता है? हज़रत अक़दस ने मुस्कराते हुए कहा कि आप बिना झिझक लेटे रहें मैं तो आपके लिए पैहरा दे रहा हूं कि बच्चे शोर न करें। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मेहमान नवाज़ी का यह हाल था कि शुरु में जब अधिक मेहमान न आते थे तो आप मेहमानों के साथ बैठकर घर में ही खाना खाया करते थे और साथ साथ आध्यात्मिक भोजन का भी प्रबंध होता

था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम प्रत्येक मेहमान से भोजन में उसकी बिशेष आदत जैसे दूध, लस्सी, चाय या पान आदी के बारे में पुछते और प्रत्येक को उसकी आदत अनुसार चीज़ उपलब्ध करवाते। आप अलैहिस्सलाम की आदत थी कि बहुत कम खाना खाया करते थे। इसी तरह जब कोई क्षुब्धालु मित्र मुलाकात के बाद वापिस जाने लगता तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कादियान से मीलों तक उसे छोड़ने के लिए साथ जाते और बहुत प्रेम और दुआओं के साथ अलविदा करते और उनकी वापसी पर आप को उसी तरह दुख: होता जैसे कोई निकटतम मित्र अलविदा हो रहा हो।

हज़रत मुशीं जफर अहमद साहिब वर्णन करते हैं कि एक बार मनीपुर (आसाम) के दूर के क्षेत्र से दो मेहमान हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का दावा सुनकर कादियान आए और मेहमान खाना पहुंचकर उन्होंने सेवकों को तांगे से सामान उतारने को कहा लेकिन उन्होंने किसी आवश्यक काम के कारण से ध्यान न दिया तो उनको बहुत दुख हुआ और वे दुखी होकर उसी तांगे पर स्वार होकर वापिस बटाला की तरफ चल पड़े। जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इस बात का पता चला तो आप बटाला की तरफ उन मेहमानों के पीछे तेज़ तेज़ चल पड़े और कुछ युवक और मैं भी हज़ूर अलैहिस्सलाम के साथ चल पड़ा। कादियान से ढाई मील की दूरी पर नहर के पुल के पास हम उन से मिल गए और बहुत प्रेम, निवेदन और क्षमा के साथ वापिस आने का निवेदन किया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कहा कि आपके कादियान से वापिस जाने का मुझे बहुत दुख है आप तांगे पर स्वार होकर

चलें हम पैदल चलेंगे लेकिन वे लोग आपके सम्मान और शर्म के कारण तांगे पर स्वार न हुए यहां तक कि पुनः कादियान पहुंच गए। अतिथि घर पहुंच कर हज़ूर अलैहिस्सलाम ने सामान उतारने के लिए स्वयं अपना हाथ तांगे की तरफ बढ़ाया, परन्तु युवाओं ने वह सामान उतार दिया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बहुत प्रेम से उनके साथ बात करते रहे और उनसे पुछा कि आप खाने में क्या पसंद करोगे और फिर उनकी इच्छानुसार खाना आ गया। आप उनके पास बैठे रहे और उनकी खूब सेवा की। अगले दिन जब मेहमान वापिस अपने घर जाने लगे तो हज़रत अकदस ने दो गिलास दूध के मंगवा कर बड़े प्रेम से उनकी सेवा में प्रस्तुत किए और फिर दो तीन मील पैदल चलकर उन्हें अलविदा किया।

हज़रत मुशीं जफर रज़ि. साहिब का वर्णन है कि एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मगरिब की नमाज़ के बाद मस्जिद मुबारक कादियान की उपरी मन्जिल की छत पर ही कुछ आए हुए मेहमानों के साथ खाने पीने का

Asifbhai Mansoori
9998926311

Sabbirbhai
9925900467



LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE



Your's
CAR SEAT COVER



Mfg. All Type of Car Seat Cover

E-1 Gulshan Nagar, Near Indira Nagar
Ishanpur, Ahmadabad, Gujrat 384043

इंतजार कर रहे थे। उन में से एक सहाबी मियां निजामुद्दीन साहिब भी थे। यह सहाबी बहुत ही गरीब थे यहां तक कि उनके कपड़े भी फटे हुए थे और पुराने थे। वह हज़रत अकदस से कुछ ही दूरी पर बैठे हुए थे फिर कुछ और मेहमान आते गए और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पास बैठते गए। इसी तरह हर बार आने वालों मेहमानों के कारण मियां निजामुद्दीन साहिब पीछे पीछे हटते गए यहां तक कि वह जूतों की जगह पर पहुंच गए। इतने में खाना आ गया और बंटने लगा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जो यह सारा नज़ारा देख रहे थे आपने एक सालन का प्याला और कुछ रोटीयां अपने हाथ में उठाई और मियां निजामुद्दीन के पास जाकर कहा कि:- “आओ मियां निजामुद्दीन हम और आप अंदर बैठ कर खाना खाएं” फिर आप मस्जिद के साथ वाली कोठरी में चले गए और मियां निजामुद्दीन के साथ बैठ कर एक ही प्याले में खाना खाया। यह व्यवहार देख कर मियां निजामुद्दीन फूले न समाए थे और अपनी सारी ज़िन्दगी इसी नशे में यह गुनगान करते रहे कि मैं कितना खुशनसीब हू कि खुदा ताअला के नबी और वक्त के इमाम के साथ बैठकर एक ही बर्तन में खाना खाया। यह बड़े बड़े अमीरों और शहजादों को भी नसीब नहीं होता। आप जब मसीह की यह घटना बताते तो आपकी आंखें भर आतीं।

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद के बड़े भाई मौलाना अबुल नसर साहिब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अतिथि सत्कार के बारे में एक रिवायत वर्णन करते हैं जो उन्होंने 1905 ई. में वकील समाचार पत्र भारत में छपवाई। मौलाना जब 1905 ई. में कादियान आए तो हज़रत

मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से भेंट की और उनकी संगत में रहे और मेहमान रहने के बाद कादियान से वापिस अपने शहर आए तो वकील समाचार पत्र में आप और आप के अतिथि सत्कार के बारे में एक निबंध छपा।

मौलाना साहिब वर्णन करते हैं कि:-

“मैंने क्या देखा कादियान बस्ती देखी और जनाब मिर्जा साहिब मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से मुलाकात की और उनका मेहमान रहा। जनाब मिर्जा साहिब कादियानी के उच्च चरित्र और ध्यान का मुझे धन्यवाद करना चाहिए। हज़रत मिर्जा साहिब की सूरत बहुत ही शानदार है, जिसका प्रभाव बहुत ही शक्तिशाली और दिल को मोह लेता है। आंखों में विशेष तरह की चमक है। उनका मिजाज़ बहुत ही ठण्डा लेकिन दिलों को गर्म करने वाला है। आपके चाहने वालों में बहुत ही श्रद्धा देखी। हज़रत मिर्जा साहिब के उच्च चरित्र का यह छोटा सा नमूना है कि उन्होंने मुझे आते समय कहा कि हम आपको इस वादे के साथ जाने की अनुमति देते हैं कि आप फिर आएँ और कम से कम दो सप्ताह हमारे पास रुकें। मैं जिस शोक

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ لَخَبِيرًا بَصِيرًا
(سورۃ النحل آیت 31)

Mob. : 09986670102
09036915406

Prop.

Fazal-e-Haq
Eajaz-ul-Haq



Anwar-ul-Haq
Rizwan-ul-Haq





Al-Fazal Garments

Specialist in : School Uniform, Tai, Belt, Jeans, T-Shirts, Shirts etc.

Opp. Krishna Gramina Bank, Beside Sana Medical,
Main Road, Yadgir, Karnataka

को साथ लेकर गया था उसे साथ लाया और शायद वही शोक मुझे कादियान वापिस ले जाए। अल्लाह ताअला से दुआ है कि अल्लाह ताअला हमें भी अपने प्यारे इमाम की दी हुई शिक्षा का अनुसरण करने की तौफ़ीक़ अता फ़र्माए और हम भी इसी तरह से अपने व जमाअती मेहमानों का सत्कार एवं सम्मान करने वाले हों।

(पुस्तक सीरत तय्यबा एवं पुस्तक सीरतुन्नबी लेखक मिर्ज़ा बशीर अहमद,)



पत्रिका राह-ए-ईमान का पंजीकरण

- 1- समाचार पत्र का नाम : राहे ईमान
- 2- समाचार पत्र का पंजीयन संख्या:
PUNHI NO/ 1999/4052
- 3- भाषा : हिन्दी
- 4- प्रकाशन का नियतकाल : मासिक
- 5- प्रकाशक एवं मुद्रक नाम: शुएब अहमद
राष्ट्रप्रीता : भारतीय
पता: मुहल्ला अहमदिया
कादियान, गुरदासपुर, पंजाब
- 6- सम्पादक : शेख मुजाहिद अहमद
राष्ट्रप्रीता : भारतीय
पता: मुहल्ला अहमदिया
कादियान, गुरदासपुर, पंजाब
- 7- मुद्रण का स्थान:
फज़ले उमर प्रिंटिंग प्रैस
मुहल्ला अहमदिया
कादियान गुरदासपुर, पंजाब
- 8- प्रकाशन का स्थान:
मजलिस खुद्दामुल अहमदिया , भारत
कादियान, 143516 गुरदासपुर, पंजाब

क्या आप खुत्बा जुम्अः सुनते हैं?

सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा मसूर अहमद साहिब खलीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनसैहिल अज़ीज़ का भारतीय समय अनुसार शाम 6:30 बजे खुत्बा जुम्अः मुस्लिम टेलिविज़न अहमदिय्या के द्वारा लन्दन से सीधा प्रसारित होता है। यह खुत्बा उर्दू के अतिरिक्त संसार की कई मुख्य भाषाओं में साथ के साथ अनुवाद होता है।

खुत्बा जुम्अः में हुज़ूर सम्मायीक विषयों, मुसलमानों की अवन्नति के कारण और उससे बचने के मार्ग मोमिना के आत्म सुधार के मार्ग इत्यादि कई विषयों पर उपदेश फ़र्माते हैं। एक सच्चे अहमदी मुसलमान के लिए खुत्बा जुम्अः ईमान में वृद्धि का प्रमुख साधन है। पाठकों से निवेदन है कि समय पर यह खुत्बा खुद भी सुनें और अपने मित्रों को भी सुनाएँ। खुत्बा जुम्आ मुस्लिम टेलिविज़न अहमदिय्या में देखने और सुनने के लिए इन्टरनेट के माध्यम से www.alislam.org से भी लाभ उठाया जा सकता है को सेट करें।
(सम्पादक)

मुबारक हो

नवीद अहमद फज़ल मैनेजर पत्रिका राहे ईमान को अल्लाह तआला ने अपने फज़ल से दूसरे बेटे से नवाज़ा है। बच्चे का नाम जुनैद अहमद फज़ल है

अल्लाह तआला बच्चे को नेक सालिह और दीन का ख़ादिम बनाए। इसी तरह सेहत व सलामती वाली उम्र अता फरमाए। (सम्पादक)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का इल्हाम

बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूँढ़ेंगे।

पहली बार पूरा होने की चमत्कारी घटना

हज़रत खलीफतुल मसीह सालिस ने खुत्बा जुम्हः 15 जुलाई 1966 में फरमाया:

हज़रत मसीह मौऊद ने 1868 ई में फरमाया कि मुझे अल्लाह तआला ने इल्हाम के द्वारा बताया है कि:

“ बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूँढ़ेंगे।”

उस वक्त आप को कोई भी न जानता था, कादियान भी कोई न जानता था, जमाअत अहमदिया को भी कोई नहीं जानता था, लेकिन कहा जा सकता है कि खुद हज़रत मसीह मौऊद भी न जानते थे क्योंकि उस समय अल्लाह के हुक्म से जमाअत का क्रयाम नहीं किया गया था और बैअत भी शुरू नहीं हुई थी। उस समय अल्लाह तआला ने यह भविष्यवाणी की और लगभग सौ साल तक मुखालिफ़ को मौका दिया कि जितना चाहो मज़ाक कर लो, ठट्ठा कर लो, उपहास कर लो, ताने दे लो। यह कलाम हमारा (अज़ीज़ खुदा का) कलाम है, जो एक दिन पूरा होकर रहेगा, इस साल अल्लाह तआला ने अपने फज़ल से वह सामान पैदा कर दिए (दो कम सौ साल के बाद) जब इस समय एक नया देश बनाया गया। फिर अल्लाह तआला की तकदीर ने इस देश को आज़ादी दिलाई, फिर अल्लाह तआला के तकदीर के अनुसार जब इस देश की अपनी सरकार बनी, तो उसका प्रधान और उसका एक्टिंग (Acting) गवर्नर जनरल उस आदमी को नियुक्त किया गया जो नियुक्ति के दिन से पहले जमाअत अहमदिया

जाम्बिया के प्रैजिडेंट था। इस तरह जमाअत अहमदिया के राष्ट्रपति को गवर्नर जनरल बना दिया गया। फिर उन्हें हमारे (मुरब्बी) ने ध्यान दिलाया कि अल्लाह तआला की एक खुश ख़बरी है कि “ बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूँढ़ेंगे।” तुम खुश नसीब इंसान हो कि दुनिया की तारीख़ में तुम्हें पहली बार यह मौका मिल रहा है कि हज़रत मसीह मौऊद कपड़े से तुम बरकत प्राप्त कर सको, लेकिन यह कोई मामूली बात नहीं। इसलिए इससे पहले कि तुम इस बारे में समय के खलीफ़ा को अपनी दरख़वास्त (आवेदन) भिजवाओ चालीस दिन तक चिल्ला करो, यानी विशेष रूप से दुआएं करो, इस प्रकार के चिल्ला नहीं जो सूफिया और फकीर क्या करते हैं चालीस दिन तक विशेष रूप से तहज़ुद में दुआ करो कि खुदा तआला तुम्हें इस बात का पात्र बनाए कि हज़रत मसीह मौऊद के कपड़े का एक टुकड़ा तुम्हें मिले।

उन्होंने दुआ शुरू की और फिर मुझे पत्र लिखा कि मैं दुआओं में संलग्न हूँ और अल्लाह तआला के सामने गिड़ गिड़ा रहा हूँ कि मैं एक भारी ज़िम्मेदारी ले रहा हूँ, सिर्फ़ सम्मान नहीं कर रहा, सिर्फ़ तबर्क़ हासिल नहीं कर रहा, बल्कि बड़ी भारी ज़िम्मेदारी भी ले रहा हूँ एक आदमी जो हज़ारों मील दूर रहता है न कभी रबवा आया, न ही अहमदियत की तारीख़ से पूरी तरह परिचित, उसके दिल में हज़रत मसीह मौऊद के तबर्क़ का महत्त्वता जब तक पूरी तरह बिठा न दी जाती मेरे नज़दीक उन्हें तबर्क़ भिजवाना

सही नहीं था। इसलिए मैंने उन्हें एक लंबा खत लिखा और उन्हें यही बिंदु समझाया कि तुम हज़रत मसीह मौऊद का तबरूक मांग रहे हो, इस में बरकत भी बड़ी मगर यह भी नहीं भूलना कि इसकी कीमत इतनी है कि सारी दुनिया के सोने और सारी दुनिया के चांदी और सारी दुनिया के हीरे और रत्न भी अगर इस के मुकाबले में रखे जाएँ तो उनकी वह कीमत नहीं जो हज़रत मसीह मौऊद के कपड़े के एक टुकड़ा की कीमत है। इसलिए तुम एक बड़ी जिम्मेदारी ले रहे हो। मानसिक रूप से रूहानी और नैतिक रूप से अपने आप को इस के योग्य बनाओ।

यह लेख था इस खत का जो मैंने उन्हें लिखवाया और उन से इंतज़ार करवाया ताकि जब उनकी यह रूहानी प्यास और भड़के और उन के दिल में जिम्मेदारी की पूरी संवेदनशीलता पैदा हो जाए तब वह तबरूक उन्हें भेजा जाए।

पंद्रह बीस दिन हुए वह तबरूक उन्हें भेजा गया और मुझे अब घोड़ा गली में उनकी तार मिली है कि वह तबरूक मुझे मिल गया है, दुआ करें कि अल्लाह तआला मुझे इस से विधिवत लाभ उठाने की तौफ़ीक़ बख़्शे।

(अल्फज़ल 17 अगस्त 1966 ई)

फिर हुज़ूर ने खुत्बा जुम्आ 16 सितंबर 1966 ई में फरमाया

हज़रत मसीह मौऊद को 1868 में यह इल्हाम हुआ कि:

“ बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूँढ़ेंगे।”

इस पर जब एक लंबा समय बीत गया और अल्लाह तआला ने उसके पूरे होने के सामान न किए तो दुश्मन ने हर तरह से उसका मज़ाक उड़ाया और उपहास किया और टट्टा से बातें कीं। तब लगभग एक सौ साल बाद अल्लाह तआला ने ऐसे माल पैदा कर दिए कि जाम्बिया

जो पश्चिमी अफ्रीका का एक देश है उसे आज़ाद कराया और फिर वहाँ एक अहमदी श्री सनघटे साहब को जो अपनी पार्टी के सदर भी थे गवर्नर जनरल बना दिया। फिर उन्होंने मुझे से हज़रत मसीह मौऊद को कपड़ा से बतौर तबरूक मांगा और लिखा कि मैंने बड़ी दुआएं हैं और बड़ी विनम्रता और विनय के साथ अपने रब्ब के सामने झुका हूँ कि वह मुझे हज़रत मसीह मौऊद के कपड़े से बरकत प्राप्त करने की तौफ़ीक़ अता करे। इसलिए खुदा तआला ने ऐसे सामान पैदा कर दिए कि जिन्हें देखकर हैरत होती है। पहले मुझे घबराहट थी कि उनकी मांग के बाद उन्हें कपड़ा मिलने में बहुत अधिक देर हो रही है लेकिन अल्लाह तआला की इच्छा कुछ और ही थी। आखिर वह कपड़ा उन्हें यहां से रवाना कर दिया गया और वह कपड़ा उन्हें जिस दिन सुबह डाक के द्वारा मिला उसी रात को बी.बी.सी से यह घोषणा हुई कि उन्हें ऐक्टिंग गवर्नर जनरल से गवर्नर जनरल बना दिया गया है।

इसका नतीजा यह हुआ कि उनके दिल में खुदा तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और इस्लाम और हज़रत मसीह मौऊद के लिए बहुत प्यार पैदा हो गया। जिस प्यार का इज़हार उन्होंने पहले एक तार और फिर एक खत के माध्यम से किया। फिर अल्लाह तआला ने उन पर एक और सांसारिक बरकत दी। आज ही उनका तार मिला है जिसमें उन्होंने बताया कि मुझे ब्रिटेन की हुकूमत ने KNIGHT-HOOD (नाइट हुड) प्रदान किया है। मेरी तरफ से जमाअत को मुबारक बाद पहुंचा दें।

(अल्फज़ल 5 अक्टूबर 1966 ई)

☆ ☆ ☆

लाहे-अमल अर्थात खुद्दामुल अहमदिया का कार्यक्रम

और हर एक के लिए एक लक्ष्य है जिसकी ओर वह ध्यान देता है ।

अतः नेक कामों में एक दूसरे से आगे बढ़ जाओ। (अल्-बक्रर: 149)

अनुवादक- शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री

(भाग-6)

तहरीक जदीद विभाग

प्रत्येक मज्लिस में एक “नाज़िम” तहरीक जदीद नियुक्त किया जाए।

*-तहरीक जदीद के माली जिहाद के दो भाग हैं :-

(1) वादों की प्राप्ति ।

(2) वादों की वुसूली

जहां तक तहरीक जदीद के वादों की प्राप्ति का संबंध है प्रत्येक मज्लिस अपने शत (100) प्रतिशत खुद्दाम से शीघ्र से शीघ्र वादे प्राप्त करके उनकी सूची कार्यालय खुद्दामुल अहमदिया भारत को भिजवाए और अपने पास वादों और वुसूली का रिकार्ड रखे। फिर वर्ष की शेष अवधि में खुद्दाम को वादों की अदायगी की ओर ध्यान दिलाते रहें, यह भी प्रयास करें कि आर्थिक सामर्थ्य रखने वाले सज्जन “विशेष सहयोगी” मुजाहिदों की सूची में सम्मिलित हों। (जिनका वादा एक हजार रुपए या इस से अधिक हो वह “विशिष्ट सहयोगी” कहलाएगा)

*-प्रत्येक मज्लिस प्रयास करे कि उस का कम से कम एक सदस्य इस्लाम की सेवा के लिए जीवन समर्पित (वक्फ़) करे (बड़ी मज्लिसें जहां खुद्दाम की संख्या 50 से अधिक है वे अपने ऊपर इस बात को अनिवार्य समझें) इस उद्देश्य के लिए वर्ष में कम से कम “जीवन वक्फ़” के विषय पर दो भाषण करवाए जाएं।

*- सामान्य सभा में कभी-कभी खुद्दाम को सामान्य जीवन के विभिन्न पहलुओं की ओर ध्यान दिलाया जाए तथा इस बात की ओर विशेष ध्यान रहे और

नियमित निरीक्षण होता रहे कि खुद्दाम लिबास और आहार इत्यादि में सादगी धारण कर रहे हैं। इसी प्रकार तहरीक जदीद की अन्य मांगों को भी हर संभव उपाय से पूरा करने का प्रयास किया जाए तहरीक जदीद का आर्थिक वर्ष प्रथम नवम्बर से प्रारंभ होता है।

वक्रारे अमल (श्रमदान) विभाग

वक्रारे अमल की वास्तविक भावना यह है कि युवाओं में यह भावना पैदा की जाए कि काम करना सम्मान का कारण तथा किसी काम या व्यवसाय को तथा उससे सम्बन्ध किसी व्यक्ति को घृणा और तिरस्कार से न देखा जाए, सामान्य जीवन में अपने कार्य स्वयं अपने हाथ से करने की आदत पैदा की जाए, परिश्रम, मेहनत, पराक्रम की आदत डाली जाए। वक्रारे अमल व्यक्तिगत स्तर पर भी होता है और सामूहिक स्तर पर भी।

(क) व्यक्तिगत वक्रारे अमल

निम्नलिखित बातों की ओर विशेष तौर पर ध्यान दिलाया जाए और साथ-साथ देखा जाए कि उस पर कहाँ तक :-

1. घरेलू काम-काज में हाथ बंटाना।
2. सौदा इत्यादि स्वयं खरीद कर लाना।
3. यात्रा करते समय अपना सामान यथासंभव स्वयं उठाना।
4. मस्जिद, कब्रिस्तान, जमाअती इमारतें, गली और मुहल्ले की सफाई।
5. अपने कपड़े स्वयं धोना।
6. अपने जूते स्वयं पालिश करना।

(ख) सामूहिक वक्रारे अमल

मज्लिसें अपनी परिस्थितियों और साधनों के अनुसार प्रत्येक माह में कम से कम एक सामूहिक वक्रारे अमल अवश्य करें। जिसमें समस्त सदस्य सम्मिलित हों। सामूहिक वक्रारे अमल में सड़कों की मरम्मत, नालियों, निकलने-बैठने के स्थानों, मार्गों की मरम्मत और सफाई, गढ़ों को भरना, मस्जिदों तथा नमाज़ पढ़ने के केन्द्रों, कब्रिस्तान और जमाअती इमारतों की सामूहिक स्वच्छता, पौधे लगाना, पुलों, सार्वजनिक पार्कों, खेल के मैदानों की मरम्मत और तैयारी तथा आस-पास को सुसज्जित करना इत्यादि सम्मिलित हैं। आवश्यक है कि वर्ष में दो आदर्श वक्रारे अमल किए जाएं।

आदर्श स्तर के वक्रारे अमल के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक है :-

1. उपस्थिति की दृष्टि से कम से कम 60 प्रतिशत खुद्दाम का प्रतिनिधित्व हो।
2. वक्रारे अमल के स्तर की दृष्टि से किया गया कार्य स्पष्ट तौर पर दिखाई देने वाला तथा सार्वजनिक भलाई से संबंध रखने वाला हो। उदाहरणतया पुल का निर्माण, सड़क की मरम्मत, मस्जिद और मिशन हाऊस का निर्माण, किसी मुहताज के घर का निर्माण अथवा किसी सार्वजनिक स्थल उदाहरणस्वरूप अस्पताल, स्कूल, रेलवे स्टेशन, बस स्टेण्ड इत्यादि की सजावट और स्वच्छता आदि।
3. समय की दृष्टि से कम से कम इस पर तीन घंटे का समय लगाया गया हो।
4. अत्फ़ाल को भी सम्मिलित करके खुद्दाम के कन्धे से कन्धा मिलाकर काम करने का प्रशिक्षण दिया जाए।
5. प्रान्तीय/मंडलीय (ज़ोनल) स्तर पर भी वर्ष में कम से कम एक बार आदर्श स्तर का वक्रारे अमल का प्रोग्राम बनाया जाए।

राह-ए-ईमान मार्च 2016 - 22

आदर्श वक्रारे अमल के सन्दर्भ में कुछ आवश्यक निर्देश


1. अपने क्षेत्र के किसी प्रभावशाली व्यक्ति को आरंभ या समापन के अवसर पर निमंत्रण दें।
2. जमाअती लोगों के अतिरिक्त लोगों की चर्चाएं और समीक्षाएं भी केन्द्रीय कार्यालय में भिजवाएं।
3. यदि समाचार पत्र इत्यादि में रिपोर्ट या फोटो प्रकाशित हो तो उसकी कटिंग भिजवाएं।
4. वक्रारे अमल की निश्चित रिपोर्ट जल्दी से जल्दी केन्द्रीय दफतर को भिजवाएं। आदर्श वक्रारे अमल की रिपोर्ट फोटो सहित “मिशकात” और “राह-ईमान” में प्रकाशन हेतु भिजवाएं।

निम्नलिखित बातों की योजना बना कर प्रत्येक मज्लिस उस के अनुसार कार्य और निश्चित रिपोर्ट भिजवाए।

वृक्षारोपण

वृक्षारोपण सप्ताह मनाकर विशेषकर मस्जिद और जमाअती भवन के साथ उचित स्थानों पर फूल और छायादार वृक्ष लगाना, सड़क के किनारे और खाली स्थानों पर छायादार वृक्ष लगाएँ।

*-प्रत्येक मज्लिस के पास वक्रारे अमल के लिए उचित सामान होना चाहिए और उसकी ठीक ढंग



☎ : 06784-230727
Mob. : 9437060325

JANATA
STONE CRUSHING INDUSTRIES
Mfg. :
Hard Granite Stone. Chips, Boulder etc.

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

At - Tisalpur, P.O. - Rahanja,
Distt. - Bhadrak - 756 111

से सुरक्षा होना चाहिए अपितु प्रयास करना चाहिए कि उसमें बढ़ोतरी होती रहे। केन्द्रीय प्रतिनिधियों और इन्सपैक्टर्स अपने निरीक्षण भ्रमण में यह देखेंगे कि मज्लिस के पास वक्रारे अमल का उचित सामान मौजूद है या नहीं।

व्यवसाय और व्यापार विभाग

1. अहमदी युवाओं की बे रोजगारी और बेकारी दूर करने के लिए प्रयास किया जाए और व्यापार जैसे सम्माननीय पेशे के खोए हुए सम्मान को पुनः स्थापित करते हुए उन्हें लोहार, दर्जी, बढ़ई, झंझीरालशी इत्यादि के काम सीखने तथा व्यापार का व्यवसाय करने की प्रेरणा दी जाए, विशेषकर विद्यार्थियों को टेक्नीकल संस्थानों में शिक्षा ग्रहण करने की नसीहत की जाए। इसी प्रकार देहात में रहने वाले ज़मींदारी इत्यादि करने वाले युवाओं को खेती-बाड़ी, मुर्गीखाना, मछली पालन और माली का काम जैसी कलाओं के कोर्सेज से परिचित कराया जाए तथा जिनके पास देहात में कुछ अधिक कार्य नहीं (जैसे ज़मीन थोड़ी है तथा काम करने वाले लोग अधिक हैं) उनको घर से बाहर निकल कर कोई अन्य कार्य करने की प्रेरणा दी जाए। ऐसे बेकार ख़ुद्दाम की एक सूची उनकी शैक्षणिक योग्यता और विशेष कुशलता प्रान्तीय/मंडलीय क्राइड को भिजवाई जाए ताकि काम की खोज करने में उनका उचित मार्ग-दर्शन कर सके।

2. प्रत्येक ख़ादिम अपने व्यवसाय के अतिरिक्त कम से कम एक कला अवश्य सीखे।

3. किसी कला (हुनर) को जानने वाला ख़ादिम प्रति वर्ष कम से कम एक ख़ादिम को अपनी कला मुफ्त सिखाए।

4. मज्लिसों में अपने-अपने स्थान पर औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान स्थापित करने का प्रयत्न करें।

5. प्रान्तीय/मंडलीय (ज़ोनल) स्तर पर एक कमेटी स्थापित की जाए जिस में नाज़िम (प्रबन्धक) उद्योग तथा व्यापार और भिन्न-भिन्न व्यवसायों से संबंधित

विशेषज्ञ सम्मिलित हों। इस कमेटी के सदस्यों के नामों की स्वीकृति केन्द्र से प्राप्त की जाए। यह कमेटी आवश्यकतानुसार सभा आयोजित करके बेरोज़गार ख़ुद्दाम की पड़ताल करके उनकी यथास्थिति जीविका का साधन और व्यवसाय बताए। कमेटी के पास व्यवसाय के अवसरों की जानकारी भी उपलब्ध हो।

“काइड” अपने यहाँ उपलब्ध व्यवसाय के अवसरों का विवरण केन्द्र को भेजें ताकि उन जानकारीयों से अन्य ख़ुद्दाम को भी लाभ पहुँचाया जा सके।

6. स्थानीय सालाना समारोहों के अवसरों पर ख़ुद्दाम की हैन्डी क्राफ्ट्स वस्तुओं की प्रदर्शनी और विक्रय का प्रबन्ध भी किया जाए ताकि अन्य ख़ुद्दाम में भी प्रेरणा उत्पन्न हो।

7. मज्लिसों में मौजूद भिन्न-भिन्न कला जानने वाले विशेषज्ञ और व्यापारियों की सूची विवरण सहित केन्द्रीय कार्यालय को भिजवाई जाए।

8. जिन स्थानों पर कोई टेक्नीकल ट्रेनिंग सेन्टर मौजूद हों वे मज्लिसें उन संस्थानों के सम्पूर्ण विवरण से केन्द्र को सूचित करें।

9. ख़ुद्दाम को आसान कलाएं जो घरेलू तौर पर प्रयोग हो सकती हों सिखाई जाएं।

10. टाइपिंग तथा कम्प्यूटर की शिक्षा भी ख़ुद्दाम के लिए अत्यन्त लाभप्रद है।

**LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE**

Cell
9423805546 / 9960071753
9420399786 / 2363271443

Prop.
Hameed Khan Beejali



Durwankur, Appt. 05, Old, Shiroda Naka,
Tal. Sawantwadi, Distt. Sindhudurg, Maharashtra - 416510

11. छुट्टियों में खुद्दाम विद्यार्थियों को विभिन्न शिल्पकारियां सीखने के लिए मज्लिस की ओर से प्रेरणा दी जाए ताकि अवकाश के समयों का उत्तम रंग में लाभ उठाएं ।

12. भिन्न-भिन्न profession से संबंधित विशेषज्ञों को बुला कर खुद्दाम को उनके शिल्प (हुनर) से परिचित कराया जाए तथा मज्लिस की ओर से खुद्दाम को vocational Training (व्यवसायिक प्रशिक्षण) के संबंध में समस्त जानकारीयां समय-समय पर उपलब्ध कराई जाएं ।

13. मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया भारत के प्रबंध के अन्तर्गत युवाओं को शिल्प सिखाने के उद्देश्य से क्रादियान दारुल अमान में “दारुस्सनअत” और कम्प्यूटर इन्स्टीट्यूट स्थापित हैं खुद्दाम इन से भी यथाशक्ति लाभ उठाने का प्रयत्न करें । आदरणीय क्राइद समय-समय पर खुद्दाम को इस ओर विशेष ध्यान दिलाते रहें ।

स्वास्थ्य विभाग

हज़रत खलीफ़तुल मसीह तृतीय रहिमहुल्लाहा फरमाते हैं कि:-

“पश्चिमी क्रौमों... को हम पराजित नहीं कर सकते जब तक स्वास्थ्य के मैदान में हम उन्हें पराजित न करें अर्थात् स्वास्थ्य की दृष्टि से। शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से हम उनसे आगे निकलने वाले हों, अधिक मेहनत से कार्य करने वाले हों।”

(अलफ़ज़ल जलसा सालाना नम्बर, 1981 ई.)

स्वच्छता, स्वास्थ्य की सुरक्षा व्यक्तिगत तथा सामूहिक खेलें

1. खुद्दाम को स्वच्छता के बारे में नियम सिखाए जाएं उनका पालन करने की नसीहत की जाए । इस उद्देश्य के लिए स्थानीय बैठकों इत्यादि में स्वास्थ्य सुरक्षा के विभिन्न विषयों पर उदाहरणतया शारीरिक स्वच्छता, घरों, गलियों, मुहल्लों की स्वच्छता, संतुलित आहार,

नशा तथा धूम्रपान इत्यादि की हानियां तथा व्यायाम और खेल के लाभ इत्यादि पर विशेषज्ञों और डाक्टरों तथा अन्य लोगों से तक्रर करवाई जाएं ।

2. वर्ष में कम से कम एक बार समस्त खुद्दाम तथा अत्फ़ाल की सेहत के चेक करने का भी प्रबन्ध हो ।

3. पिकनिक और “कुलू जमीआ” (सामूहिक रूप से मिलकर भोजन करना) के द्वारा स्वास्थ्य वर्धक मनोरंजन के व्यवस्थित अवसर उपलब्ध किए जाएं ।

स्वास्थ्य-सुरक्षा के लिए निम्नलिखित बातों की ओर विशेष ध्यान दिया जाए :-

- (क) स्वच्छ लिबास पहनना और पवित्र रहना ।
- (ख) नियमित रूप से स्नान करना तथा शरीर को मैल से स्वच्छ रखना
- (ग) समारोहों और बैठकों इत्यादि में सम्मिलित होने के लिए खुशबू लगाकर जाना ।
- (घ) बदबू वाली चीज़ जैसे प्याज़, लहसन खाकर सभाओं में न जाना।
- (ङ) छींकने, जमाही लेने और खांसने से संबंधित इस्लामी नियमों का ध्यान रखना। ये बातें ज़ाहिर में यद्यपि कि छोटी-छोटी हैं परन्तु इन का ध्यान न रखना सोसाइटी को अच्छा नहीं रहने देता बल्कि रोगों के फैलने का कारण भी बनता है।

Mob. 9934765081

Guddu Book Store

All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E & C.C.E are available here. Also available books for childrens & supply retail and wholesale for schools

Urdu Chowk, Tarapur, Munger,
Bihar 813221

4. सामूहिक खेल :- सामूहिक खेलों जैसे कबड्डी, फुटबाल, बैडमिन्टन, वाली बाल, हाकी, बास्केट बाल इत्यादि की ओर यथायोग्य ध्यान दिया जाए। प्रत्येक मज्लिस सामूहिक खेल की कोई न कोई टीम तैयार करे और अच्छे खिलाड़ियों के नाम और विवरण केन्द्रीय कार्यालय में भिजवाए। उसकी एक प्रति प्रान्तीय/मंडलीय “क्राइड” को भिजवाए।

5. मुहल्ले, शहर या जिले की अन्य टीमों के मध्य मुकाबले कराए जाएं, खेल का स्तर बढ़ाने और स्पर्धा की रूह को जागृत करने के लिए मुकाबले बहुत जरूरी होते हैं।

6. व्यक्तिगत खेलें :- वर्ष के आरंभ से ही समस्त खुद्दाम को व्यक्तिगत खेलों जैसे दौड़, छलांग लगाना, गोला फेंकना इत्यादि में रुचि उत्पन्न करने की ओर ध्यान दिलाएं।

7. स्थानीय तौर पर खिलाड़ी खुद्दाम की निगरानी करें कि वे वर्ष के मध्य मेहनत, लगन और दृढ़ता के साथ अपने स्तर को बढ़ाने का प्रयत्न करें। यथासंभव अहमदिया स्पोर्ट्स क्लब स्थापित करें। खुद्दाम और अत्फाल के लिए जमाअती तौर पर मस्जिद के निकट ही खेल का प्रबन्ध किया जाए ताकि प्रशिक्षण के दृष्टिकोण से उनकी उचित निगरानी की जा सके और

वे जमाअत के साथ नमाज़ की अदायगी कर सकें और समाज की बुराइयों से सुरक्षित रह सकें।

8. खुद्दाम की सामान्य जांच करके ऐसे खुद्दाम को खेलों पर तैयार करें जो शक्ति की दृष्टि से योग्यता रखते हों परन्तु मात्र आलस्य या अज्ञान होने के कारण नष्ट हो रहे हों और उनके प्रशिक्षण और नमाज़ों में उपस्थिति का प्रबन्ध करें। प्रत्येक खेल में नए खिलाड़ी तैयार करें।

9. यदि किसी मज्लिस की अपनी टीम न हो परन्तु खुद्दाम अन्य टीमों में नियमित रूप से भाग लेते हों तो ऐसे खुद्दाम और उच्च स्तरीय खिलाड़ियों के विवरण का रिकार्ड रखा जाए।

10. प्रत्येक मज्लिस परिस्थितियों और सामर्थ्य के अनुसार अपने सदस्यों के लिए स्वास्थ्य वर्धक खुद्दाम क्लब की स्थापना करे ताकि खुद्दाम वहाँ आकर व्यायाम कर सकें।

रोज़ाना सैर

खुद्दाम में रोज़ाना सुबह की सैर की आदत पैदा की जाए तथा इस बारे में विशेष तौर पर बल दिया जाए।

साइकिल सवारी

खुद्दाम में साइकिल सवारी का विशेष तौर पर प्रचलन किया जाए तथा खुद्दाम को साइकिल पर लम्बी यात्रा

يُنَبِّئُكُمْ بِهِ الرَّزَقَ وَالزُّيُونُ وَالنَّعِيلُ وَالْأَغْنَابُ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ (سورة النحل: 12)

Phangudubabu : 7873776617
Papu : 9337336406
Lipu : 9778116653

FAIZAN FRUITS TRADERS

Near Railway Gate, Soro, Balasore, Odisha - 756045

PAPU LIPU ROAD WAYS
All India Truck Supplier
Papu : 9337336406, Lipu : 9437193658, 9778116653

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا (سورة النحل: 31)

LUCKY BATTERY CENTRE
BATTERY & DIGITAL INVERTER

Thana Chhak, NH-5 Soro
Balasore, Odisha
Pin 756045
e-mail : abdul.zahoor786@gmail.com

Mob. : 09438352786, 06788221786

करने तथा तीव्रगति का अभ्यास कराया जाए। ऐसे खुद्दाम जो साइकिल, मोटर साइकिल चलाना न जानते हों उन्हें चलाना सिखाया जाए और वर्ष में कम से कम एक बार साइकिल टूर का प्रोग्राम रखा जाए। प्रान्तीय/मंडलीय/केन्द्रीय बैठकों में प्रयास किया जाए कि निकटवर्ती मज्लिसों के सदस्य साइकिल टूर के द्वारा इन सभाओं में भाग लें।

घुड़ सवारी और तैराकी

परिस्थितियों के अनुसार अधिक से अधिक खुद्दाम को घुड़सवारी की नसीहत की जाए और ऐसे खुद्दाम के विवरण केन्द्र में भिजवाए जाएँ। खुद्दाम को तैरना सीखने की ओर भी ध्यान दिलाते रहें।

निशाना गुलेल

खुद्दाम में गुलेल का प्रचलन किया जाए और समय-समय पर गुलेल के मुक्काबलों का आयोजन किया जाए। इस बात की बारम्बार नसीहत करें कि प्रत्येक खादिम के पास उसकी अपनी गुलेल हो।

खेल और (अदब)शिष्टाचार

खेल के मध्य, सत्य, आज्ञापालन, नियम और शिष्टाचार की अवहेलना न की जाए। खुद्दाम में विशाल साहस पैदा करने का प्रयास किया जाए स्पर्धा की भावना के बावजूद पराजय को प्रफुल्लता के साथ स्वीकार करना और गलत

समझते हुए भी रेफरी के फैसला को निःसंकोच स्वीकार करना ऐसे शिष्टाचार हैं जिनके अभाव में कोई खिलाड़ी कहलाने का पात्र नहीं रहता। इस दृष्टिकोण को बारम्बार खुद्दाम के सामने लाया जाए कि जब तक हम अन्य समस्त विशेषताओं की तरह खेल के मैदान में भी दूसरों से अग्रसर नहीं होते हमें सन्तुष्ट नहीं होना चाहिए। खिलाड़ियों में प्रत्येक मुक्काबले से पहले दुआ करने की आदत पैदा करें तथा उन्हें इस्लामी आचरण की पाबन्दी और गैर इस्लामी परम्पराओं जैसे ज़मीन को हाथ लगाकर सिर पर लगाना तथा बुजुर्गों के पैर छूना आदि बातों से बचना चाहिए एवं खिलाड़ियों का उत्साह बढ़ाने के लिए तालियां और सीटियां बजाने के स्थान पर “हब्बज़ा” (वाह-वा, अति उत्तम) कहने के ढंग को प्रचलित किया जाए। शारीरिक स्वास्थ्य के नाज़िम (प्रबन्धक) केन्द्रीय हिदायतों को ध्यानपूर्वक पढ़ कर उनके अनुसार अपने स्थानीय प्रोग्राम निर्धारित करें। (शेष.....)



Prop. Yasin Khan (Asin) M : +91 92532-00786 +91 99964-74040 +91 99969-92626 email : yyykhan@gmail.com www.facebook.com/saloniboutique	Prop. Yasmeen Khan (Jarina) M : +91 98966-81888
Saloni Hand & Machine Embroidery & Adil Lace House Specialist in : Hand Embroidery & Machine Embroidery on suit, Lehngas, Punjabi Suit, Chuni, Fancy Dupatta	
हमारे यहाँ पर Embroidery वर्क, हाथ व मशीन की कढ़ाई, कढ़ाई सूट, फैन्सी दुपट्टे, प्लेन फैबरिक व फैन्सी लैस आदि तैयार मिलती हैं।	

गुलदस्ता

मस्जिद के आदाब

मस्जिद अल्लाह तआला का घर है। दिन में हमें पांच बार मस्जिद में जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने का हुकुम है। अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में ब्यान किया है कि मस्जिद में अपनी सुन्दरता को धारण कर के आना चाहिए। मस्जिद के लिए इस्लाम



धर्म में कुछ आदाब हैं। उन में से कुछ का यहां वर्णन किया जा रहा है।

मस्जिद में साफ होकर और साफ कपड़े पहन कर जाना चाहिए।

इस्लाम ने इसे पसंद किया है कि नमाज़ आदि के अवसर पर सिर पर टोपी आदि रखी जाए। सिर नंगा न हो।

मस्जिद में प्रवेश करते हुए पहले दायां पांव अंदर रखें और मस्जिद में दाखिल होने की दुआ पढ़ें।

बिस्मिल्लाहिस्लातो वस्सलामो अला रसूलिल्लाहे अल्लाहुम्मा अगफिरली जुनूबी अफतह ली अब्बाबा रहमतेका

मस्जिद में दाखिल होकर लोगों को उचित आवाज़ में अस्सलामो अलैकुम कहें।

मस्जिद में प्रवेश करने के बाद यदि समय हो तो दो नफल अदा करें जिन्हें “तहय्यतुल मस्जिद” यानी “मस्जिद का तोहफा” कहा जाता है।

लहसुन 'प्याज़' मूली या कोई और बदबू दार चीज़ खा कर या गंदी जुराबें और गंदे कपड़े पहन कर मस्जिद में न जाएं। मस्जिद में थूक, नाक साफ करने या ऐसी हरकत करना जो सफाई के खिलाफ हो मना है।

मस्जिद को हर किस्म की गंदगी से साफ और सुगंधित रखें।

मस्जिद में दायरे बनाकर न बैठें “बल्कि चुपचाप जिक्र इलाही करते रहें और गैर धार्मिक बातें करने से बचें। तथा जब कोई बात करनी आवश्यक हो तो धीरे इतना है कि दूसरों की इबादत में व्यवधान न आए।

नमाज़ पढ़ने वालों के आगे से गुज़रना सख्त मना है।

मस्जिद में प्रवेश करने के बाद अगली सफें (पंक्तियाँ) पहले भरें। यदि आप बाद में आए हैं तो लोगों के सिर और कंधे पर फलाँगते हुए आगे जाने की कोशिश न करें बल्कि जहां जगह मिले वहां बैठ जाएँ।

मस्जिद में इबादत से किसी को मना नहीं करना चाहिए।

मस्जिद में जूते निश्चित जगह पर रखें। नमाज़ पढ़ने की जगह पर जूते पहन कर न फिरे।

मस्जिद से निकलते समय अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाह कहें पहले बायां पांव बाहर रखें और यह दुआ पढ़ें।

बिस्मिल्लाहिस्सलातो वस्सलामो अला रसूलुल्लाहे
अल्लाहुम्मा अग़फ़िरली जुनूबी वाफ़तह ली अबवाबा
फज़लेका

मस्जिद से निकलने के बाद जूता दाएं पांव में
पहले पहनें।

जो लोग छोटे बच्चों को मस्जिद ले जाते हैं चाहिए
कि वह उन्हें अपने पास बिठाएं और उन पर निगाह
रखें ताकि दूसरों की इबादत (नमाज़ आदि) बाधित
न हो।

(कामयाबी की राहें)



वक्फ़े नौ किलास से

क्या तीसरा विश्व युद्ध टल सकता है?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्नेहिल
अज़ीज़ ने 31 जनवरी 2016 को (वाक्फ़ीने नौ
नासरात) की कक्षा में एक बच्ची के प्रश्न क्या तीसरा
विश्व युद्ध टल सकता है ? का जबाव देते हुए
फरमाया कि

“दुआ करो, टल जाएगी तो कुछ वर्षों
बाद पुनः हो जाएगी प्रथम छोटे पैमाने पर
तो विश्व युद्ध हो ही रहा है। इस युद्ध में

तुर्की, सीरिया, कुर्दिश, अमरीकन, रशियन, इराक़, इस्टर्न
यूरोप का मुल्क युक्रेन। इन सारे मुल्कों में युद्ध हो
ही रहे हैं न। यहाँ भी हो रहे हैं सब कुछ यह दाईश
वाले यहाँ घुस के यूरोप में कर रहे हैं। इसका परिणाम
निकल रहा है कि अमेरिका भी हमले कर रहा है
इराक़ पर वहाँ भी कर रहा है। लीबिया, यमन, सऊदी
अरब सारे ही संयुक्त हैं। तो छोटे पैमाने पर तो युद्ध
हो ही रहा है इस कारण बड़े पैमाने पर होने की
संभावनाएं भी अधिक हैं।

कुछ लेखक इस सम्बन्ध में कहते हैं कि 1936 ई
एवं 1938 में जो आर्थिक संकट आया था इस के
कुछ समय बाद युद्ध आरम्भ हो गया था। तो 2016
ई में वही संकट पुनः आने वाला है और कुछ
असम्भव नहीं के युद्ध हो जाए।

हां दुआओं से यह टल सकता है लेकिन कितनी
देर ? क्योंकि हज़रत मसीह मौऊद की सच्चाई का
निशान भी प्रकट होना है और यदि युद्ध के द्वारा ही
होना है तो इसको आना ही आना है। यह ख़ुदाई
वादे हैं और टल नहीं सकते। इसीलिए हज़रत मसीह
मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया है कि

“ऐ एशिया तू भी सुरक्षित नहीं। ऐ यूरोप के रहने
वालों तुम भी सुरक्षित नहीं हो, ऐ अमरीका तू भी
सुरक्षित नहीं है, द्वीप के रहने वाले भी सुरक्षित नहीं।
इस लिए जब अल्लाह तआला की लाठी चलनी है
तो फिर उड़ाते जाना है हर एक को।

हुज़ूर ने प्रश्न करने वाली बच्ची को सम्बोधित
करते हुए कहा, यदि तुम ने टालनी है अपनी ज़िन्दगी
तक टाल लोगी 50, 60 साल तो मुश्किल लगता है
टलना, दो चार साल की बात ज़्यादा है।

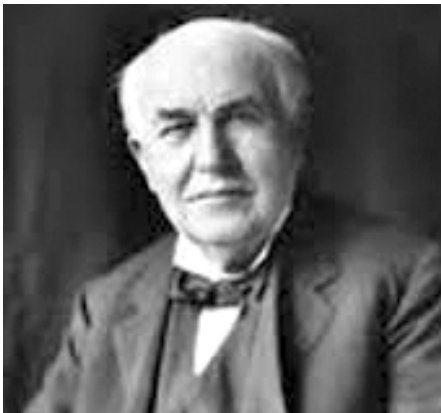
(<https://www.youtube.com/watch?v=PjkWDaonEVY>)

☆ ☆ ☆

दुनिया का महान आविष्कारक।

एडीसन

11 फरवरी सन 1847 ई दुनिया के महान आविष्कारक, एडीसन की जन्म तिथि है। वह आदमी जिसके बारे में कहा जाता है कि “वह भविष्य का आविष्कार करने वाला था।”



एडीसन ने बड़ा संघर्ष पूर्ण जीवन गुजारा। उसकी पहली नौकरी ट्रेन में अखबार बेचने की नौकरी थी मगर उसने इस नौकरी में भी एक आविष्कार का पहलू निकाल लिया और एक छोटी सी छपाई मशीन खरीद कर खुद एक साप्ताहिक अखबार प्रकाशित करने लगा।

1862 ई में उसने टेलीग्राफी का काम सीखा और फिर यही काम करने लगा। 1869 ई में उसने अपने आविष्कार को पेटेंट करवाया। यह इलेक्ट्रिक वोल्ट रिकॉर्डर था। जो यांत्रिक रूप से वोटों को दर्ज किया था उसी वर्ष वह न्यूयॉर्क चला आया। जहां उसने शेयर दलालों के उपयोग के लिए एक उपकरण Stock Ticker आविष्कार कर डाला। इस आविष्कार वां स्ट्रीट के एक बड़े वाणिज्यिक संस्था ने 40 हजार डॉलर में खरीद लिया। इस राशि ने एडीसन की जीवन की काया पलट डाली।

पहले पहल उसने न्यूजर्सी में एक प्रयोगशाला की स्थापना की। फिर वह मेनलो पार्क ले जाया गया। 1877 ई में उस ने ग्राहम बेल की ईजाद टेलीफोन में सुधार कर दिया है और इस प्रणाली को इंग्लैंड की एक संस्था को 30 हजार पाउंड के बदले बेच दिया।

इसी साल एडीसन ने अपनी लोकप्रिय आविष्कार “फोनो ग्राफ” पेश की। इस आविष्कार ने हर तरफ सनसनी फैला दी और उसे देखने और सुनने वाले दर्शकों ने प्रयोगशाला में भीड़ कर दी। इसलिए मेनलो पार्क के लिए विशेष गाड़ी चलानी पड़ी और वह सारे अमेरिका में “ मेनलो पार्क का जादूगर ” कहलाने लगा।

सितंबर 1878 में एडीसन ने बिजली के बल्ब का आविष्कार करने की तरफ ध्यान दिया और कोई एक साल की मेहनत के बाद 21 अक्टूबर 1879 ई वह एक बल्ब को साढ़े तेरह घंटे तक जलाए रखने में सफल हो गया।

1889 में एडीसन एनिमेटेड फिल्मों की ओर आकर्षित हुआ और 1891 में उसने एक उपकरण Kinetoscope पेटेंट करवाया। एडीसन ने न्यूजर्सी में एक फिल्म स्टूडियो भी स्थापित किया। जहां कई फिल्में तैयार की गईं।

एडीसन कहा करते थे कि जीनयस 99 प्रतिशत मेहनत और एक प्रतिशत खुदा की दी हुई क्षमता से अस्तित्व में आता है। 18 अक्टूबर 1931 ई को इस महान जीनयस की वफात की तारीख है। मृत्यु के समय वे लगभग तेरह सौ इजादें पेटेंट करवा चुका था और लगभग साढ़े तीन हजार नोट बॉक्स उस के विचारों, अनुभवों और उनके परिणामों से भरी हुई थीं।

हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं :

“मौजूदा समय में जितनी आविष्कार हैं वह सारी की सारी कई छोटी-छोटी बातों पर विचार करने का

परिणाम हैं। एडीसन जिस ने फोनोग्राफ और बिजली आदि कई चीजें ईजाद की हैं मैंने उसकी जीवनी पढ़ी है। वह लिखता है कि मैंने जितनी इजादें की हैं यह सब की सब कुछ छोटी बातों पर विचार करने का परिणाम है। तो सोचना और विचार करना क्रौमी तरक्की के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात है। जो क्रौमों बिना सोचे समझे केवल नारे लगाना जानती हैं वह कोई काम नहीं कर सकतीं। वह नारों से इस समय माहौल को गर्म कर सकती हैं। वह नारों से कमजोर बच्चों को डरा सकती हैं। वह नारों से कमजोर महिलाओं का दिल दहला सकती हैं। लेकिन यदि वे कोई वास्तविक काम कर सकती हैं केवल सोच विचार से और सही परिणाम निकाल कर।

(तफसीर कबीर भाग 7 पृष्ठ 220)

थोड़ा हंस लें

अंग्रेजी के प्रोफेसर से एक स्टूडेंट ने पूछा कि सर नटुरे का मतलब क्या होगा ?

प्रोफेसर साहब हैरान !

टालने के लिए कह दिया कि कल बता दूँगा।

उन्होंने पूरी डिक्शनरी छान मारी, किन्तु उन्हें नटुरे शब्द नहीं मिला।

अगले दिन स्टूडेंट ने फिर से पूछा कि सर नटुरे का मतलब क्या होता है? उस दिन भी उन्होंने बात टाल दी।

अब तो वह रोज़ पूछने लगा। प्रोफेसर साहब उससे इतना घबराने लगे कि उस लड़के को देखते ही रास्ता बदल देते, किन्तु वह रोज़ आकर उनको टैशन देकर चला जाता। अंत में झुंझला कर उन्होंने उस लड़के से कहा कि मुझे नटुरे की स्पेलिंग बताओ।

लड़के ने कहा NATURE अब तो प्रोफेसर साहब का खून खौल गया।

उन्होंने उस लड़के से कहा कि मुझे बेवकूफ बनाते हो, नेचर को नटुरे कह-कह कर तुमने मेरा जीना मुश्किल कर दिया था। मैं तुम्हें कॉलेज से निकलवा दूँगा।

लड़के ने झट से प्रोफेसर साहब के पैर पकड़ लिये और रोते रोते कहा कि सर ऐसा अनर्थ मत कीजिएगा नहीं तो मेरा “ फुटुरे ” (Future) खराब हो जाएगा।

टीचर बेहोश हो गया।

गज़ब परिवार

एक परिवार में 4 बहने थी,

एक का नाम था - : टूटेली

दूसरी का नाम - : फटेली

तीसरी का नाम - : सडेली

चौथी का नाम - : मरेली

एक दिन उनके घर पर मेहमान आया !!!!

अम्मी ने पूछा , आप कुर्सी पर बैठे गे या नीचे चटाई पर ??

मेहमान :- कुर्सी पर ।

अम्मी :- टूटेली कुर्सी लेकर आओ।

मेहमान :- नहीं नहीं ठीक है मैं चटाई पर बैठ जाता हूँ

अम्मी :- फटेली !! चटाई लेकर आओ !

मेहमान :- रहने दीजिए मैं ज़मीन पर ही बैठ जाता हूँ (मेहमान ज़मीन पर बैठ गया)

अम्मी :- आप चाय पीएँगे या दूध ?

मेहमान :- चाय

अम्मी :- सडेली !! चाय लेकर आओ

मेहमान :- नहीं नहीं , चाय रहने दो ओर दूध ले आओ

अम्मी :- मरेली !! गाय का दूध लेके आओ

मेहमान बेचारा कन्फ्यूज होकर घर से ही भाग गया

☆ ☆ ☆

सेहत के लिए अमरूद हैं फ़ायदे मंद

सेहत और अमरूद :- फल खाना किसे अच्छे नहीं लगते है। रोज़ फल खाने से सेहत भी अच्छी रहती है और किसी भी प्रकार की कोई भी बीमारी होने की आशंका भी कम होती है। ढ़ेर सारे फल होते है और सब फलों का अपना-अपना फ़ायदा होता है। सब फलों में से अमरूद भी एक ऐसा फल है जो हमारे सेहत के लिए लाभ देता है।

भारत की कुछ जगहों पर अमरूद को जामफल भी कहते है। बरसात और सर्दियों के मौसम में आपको अमरूद अधिक मात्रा में दिखाई पड़ते है।

अमरूद के ढ़ेरों किस्मों है लेकिन हरे और लाल रंग के अमरूद लोगों को काफी पसंद आते हैं। ये खाने में तो स्वादिष्ट होते ही हैं साथ ही ये सेहत के लिए भी काफी फायदेमंद होते हैं।

अमरूद में विटामिन सी अधिक होता है जिस से त्वचा से जुड़ी समस्याएं नहीं होती हैं। अमरूद

खाने से पेट से जुड़ी समस्याएं दूर होती हैं। सर्दियों के मौसम में अमरूद फलों का बादशाह होता है।

अमरूद में विटामिन ,मिनरल्स और फाइबर उचित मात्रा में पाया जाता है। अमरूद हर जगह पर आसानी से मिल जाता है और ज़्यादा महंगा भी नहीं होता है। अमरूद का जूस भी सेहत के लिए गुणकारी होता है इसलिए आप अमरूद या अमरूद

का जूस दोनों ही खा या पी सकते है दोनों ही आपके सेहत के लिए फ़ायदेमंद है।

अमरूद खाने के फायदे :- अमरूद आपको बहुत से फ़ायदे देता है और आपको स्वस्थ रखता है। अमरूद एसिडिटी, अस्थमा, ब्लडप्रेसर, मोटापा आदि समस्याओं में फायदा पहुंचाता है। कोलेस्ट्रॉल लेवल कम करता है। ये पित्त रोगों के लिए भी मददगार होता है। आइए जानते है अमरूद खाने के फ़ायदों के बारे में की कैसे यह हमें बीमारियों से बचाता है।

1.आंखो को रखे स्वस्थ : अमरूद में विटामिन ए होता है ,जो आंखो के लिए लाभदायक होता है। अमरूद अच्छी दृष्टि के लिए एक बूस्टर के रूप में जाना जाता है। जो की आंखो की रक्षा करता है।

2.कब्ज़ से दिलाए निजात : अमरूद खाने से कब्ज़ से राहत मिलती है। अमरूद शरीर के मेटाबॉलिज्म को बैलेंस

रखता है इसलिए अमरूद खाने से कब्ज़ से छुटकारा मिल जाता है।

3.त्वचा को बनाएं सुंदर:- अमरूद का सेवन आपके चेहरे को ग्लोइंग और स्वस्थ रखता है। अमरूद में पोटेशियम होता है जो की आपको कील मुंहासों से बचाकर ग्लोइंग त्वचा देता है।

4.मुंह के छालो के लिए:- अगर आपके मुंह में



छाले हैं या फिर अक्सर मुंह में छालो की समस्या बनी रहती है, तो आप अमरूद की नई – नई कोमल पत्तियों का सेवन करें। इससे आपको आराम मिलेगा। अमरूद की पत्तियों को चबाने से आपकी सांसो को ताज़गी और मसूड़ों को मजबूती भी मिलेगी

5.शूगर(diabetes) : शूगर को नियंत्रित करने में अमरूद काफी सहायक होता है, इसलिए एक स्वस्थ जीवन के लिए आप अपने खाने में अमरूद को जरूर शामिल करें।

6.मोटापा करें कम : शरीर में मोटापे की वजह शरीर में मौजूद कोलेस्ट्रॉल होता है। अमरूद में मौजूद तत्व शरीर से कोलेस्ट्रॉल को कम कर देते हैं जिससे मोटापा घट जाता है इसलिए अगर आपको मोटापा कम करना है तो अमरूद खाना शुरू करें।

7.शरीर को रखें फिट एंड फाइन: अमरूद शरीर को फिट एंड फाइन रखता है। अमरूद के पौष्टिक तत्व आपको स्वस्थ रखते हैं अगर अमरूद को सही समय पर खाया जाए तो इसलिए अमरूद को अपने प्रतिदिन के खाने में शामिल करें।

8.उच्च रक्तचाप : जिन लोगों को हाई ब्लड प्रेशर और अधिक कोलेस्ट्रॉल होता है उसे अमरूद सेवन से कंट्रोल में किया जा सकता है और जिन लोगों को विटामिन सी की कमी होती है, उन्हें भी अमरूद खाना चाहिए।

9.खासी और सर्दी (Cough & cold) : खासी और सर्दी होने पर अमरूद का सेवन करें। अमरूद में विटामिन सी होता है जो की वायरल इंफेक्शन को बढ़ने से रोकता है जिस से खासी और सर्दी से निजात मिलती है।

सच है कि अमरूद खाने में मीठा होता है। मिठास के साथ साथ इस में ढेर सारे विटामिन ,मिनरल्स और फाइबर होते हैं जो अमरूद हमें देता

है। यह हमें बीमारियों से बचाता है। आपको फिट और फाइन रखता है। फल जो भी हो हमारे सेहत के लिए फायदा ही देता है। कुछ लोग तो खाने की जगह पर फलों को खाना ज्यादा पसंद करते हैं। सर्दियों के मौसम में अमरूद सब फलों का राजा होता है। सब बीमारियों को दूर करता है अमरूद का सेवन , अमरूद तो फ़ायदेमंद होता ही है लेकिन इसका जूस भी गुणकारी होता है। घर पर बनाये गए जूस में स्वाद और गुण दोनों ही बरकरार रहते हैं। जूस में मिनरल्स और न्यूट्रीएंट्स की मात्रा अधिक होती है। जिससे हमारी त्वचा चमकती है क्योंकि जूस को शरीर जल्दी एबजॉर्ब करता है जिसका परिणाम चेहरे पर दिखना शुरू हो जाता है। इसलिए घर पर तैयार किये गए अमरूद के जूस को पीयें और स्वस्थ रहें। अमरूद के ढेर सारे फ़ायदों का मज़ा लें और फिट रहें।

☆ ☆ ☆

Fawad Anas Ahmed

GOLDEN GROUP REAL ESTATE



दुआओं का आवेदक

**DISTT. YADGIR - 585 201
KARNATAKA
Ph. : 9480172891**



जमाअत अहमदिय्या भद्रक ओडिशा
द्वारा आयोजित जलसा "थोम ए मुस्लेह मौऊद"
का द्रश्य ।



मज्लिस खुदामुल अहमदिया सोरो
ओडिशा के सदस्य वक्रार ए अमल करते हुए ।



मज्लिस खुदामुल अहमदिया मुर्शिदाबाद
बंगाल द्वारा आयोजित पिकनिक का दृश्य



मज्लिस खुदामुल अहमदिया बालासोर
ओडिशा द्वारा आयोजित पिकनिक का द्रश्य ।



खुदामुल अहमदिया कुलगाम कश्मीर के
द्वारा आयोजित कुल्लू जमिया का द्रश्य ।



मज्लिस खुदामुल अहमदिया महमूदाबाद केरंग
ओडीशा द्वारा आयोजित पिकनिक का दृश्य

Regd.with the registrar of News Papers of India at PUNHI Number 1999/04052

Postal Licence Number GDP/0192/2016-2018

Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian

RAH-E-IMAN

E-Mail : rahe.imaan@gmail.com

Chairman : Rafiq Ahmad Beig

Editor : Shaikh Mujahid Ahmad Shastri

Manager : Naveed Ahmad Fazal

Mobile : 09915379255

Mobile : 08699357278

Vol : 18

Issue : 3

March | 2016

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"और दुनिया में एक हथ्र बरपा होगा ,वह अब्वलुल हथ्र होगा और तमाम बादशाह आपस में एक दुसरे पर चढाई करेंगे और ऐसा कुशत व खून होगा कि ज़मीन खून से भर जाएगी और हर एक बादशाह की प्रजा भी आपस में खौफ़नाक लड़ाई करेगी ।

एक आलमगीर तबाही आवेगी,और समस्त घटनाओं का केंद्र मुल्क-ए- शाम(सीरिया)होगा।

(तज़करतुल महदी भाग 2)

Office Khuddam-ul-Ahmadiyya Bharat

Aiwan-e-Khidamat, Mohalla Ahmadiyya

Po.Qadian, Dist Gurdaspur-143516, Punjab, India